पाक्षिक

पाथेय कण

मूल्य ₹ 6

आश्विन (अधिक) पूर्णिमा, युगाब्द 5122, वि.2077,1 अक्तूबर, 2020

खुलने लगे हैं दिल्ली दंगों की साजिश के राज

आसिफ इकबाल तन्हा

नताशा नरवाल

ताहिर हुसैन

मीरान हैदर

देवांगना कालिता

खालिद सैफी

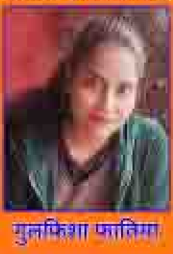
गुलफिशा फातिमा

शरजील इमाम

प्रो. अपूर्वानन्द

शिफा उर रहमान

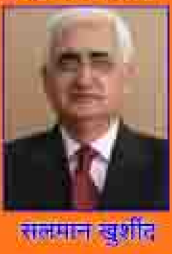
सलमान खुर्शीद

प्रशांत भूषण

पाथेय कण का आगामी अंक

' दीपावली विशेषांक '

पाथेय कण का नवम्बर संयुक्तांक **दीपावली विशेषांक** के रूप में प्रकाशित होगा। विशेषांक न केवल पाथेय कण के लगभग एक लाख परिवारों तक गाँव-गाँव पहुँचेगा, वरन् स्मरणीय एवं संग्रहणीय होने के कारण राज्य भर में समाज के प्रमुख लोगों को भेंट भी किया जाने वाला है। राज्य के बाहर सम्पूर्ण देश में तथा कई दूसरे देशों तक भी पाथेय कण पहुँचता है। उद्योगपतियों, व्यापारियों, सरकारी इकाईयों व अन्य लोगों से निवेदन है कि इस अंक में विज्ञापन देकर अपने उत्पादों/सेवाओं/जानकारियों का प्रचार-प्रसार करें।

-: विज्ञापन दरें :-

आवरण पृष्ठ (रंगीन) अंतिम	₹ 3,00,000/-
आवरण पृष्ठ (रंगीन)2 व 3	₹ 2,00,000/-
रंगीन पृष्ठ (अंदर)	₹ 1,00,000/-
रंगीन पृष्ठ (आधा)	₹ 50,000/-
सामान्य पृष्ठ (पूरा)	₹ 50,000/-
सामान्य पृष्ठ (आधा)	₹ 25,000/-
सामान्य पृष्ठ (चौथाई)	₹ 12,500/-
शुभकामना संदेश	₹ 5,000/-

पाथेय कण का आगामी अंक

' दीपावली विशेषांक '

के लिए अनुभव कथन भेजें

पाथेय कण का नवम्बर संयुक्तांक दीपावली पर **' सेवा विशेषांक '** के रूप में प्रकाशित होने वाला है। कोरोना-काल में संघ व अन्यान्य सामाजिक, धार्मिक, व्यापारिक, जातीय, सामुदायिक आदि संगठनों द्वारा एवं व्यक्तिशः भी विभिन्न प्रकार के सेवा कार्य किये गये।

इन सेवा कार्यों के संबंध में कोई प्रेरक प्रसंग या विशेष घटना आपकी जानकारी में हो या आपका कोई विशेष अनुभव रहा हो तो उसे लिखकर पाथेय कण के पते पर डाक अथवा ई-मेल द्वारा भेजें।

'सेवा' से संबंधित लघु लेख, लघु कथाएं, कविता, लघु कहानी आदि भी आमंत्रित हैं।

कृपया प्रकाशन हेतु सामग्री
10 अक्तूबर, 2020 से पूर्व ही भिजवायें।

जन्म दिवस पर शत-शत नमन

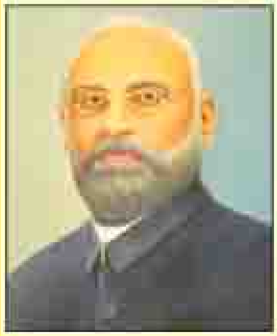

क्रांतिकारियों के
भीष्म पितामह
श्याम जी कृष्ण वर्मा
4 अक्तूबर
(1857-1930)

सुप्रसिद्ध भारतीय
खगोलविज्ञानी
मेघनाथ साहा
6 अक्तूबर
(1893-1956)

भारत के राष्ट्रवादी
एवं ध्येयनिष्ठ पत्रकार
माणिकचन्द्र वाजपेयी
7 अक्तूबर
(1919-2005)

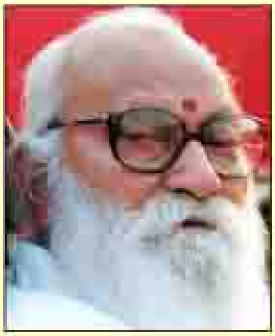

राजनीतिज्ञ एवं प्रसिद्ध
समाजसेवी भारत रत्न
नानाजी देशमुख
11 अक्तूबर
(1916-2010)

।। ॐ संभूत्या अमृतमश्नुते ।।
संगठन से ही अमरत्व की प्राप्ति होती है।।

मातृभूमि की धर्मध्वजा का अभिनंदन वंदन।
राष्ट्र देवता के चरणों में पावन शब्द नमन।।

पाक्षिक
पाथेय कण
आश्विन शु.15, युगाब्द 5122, वि.2077
1 अक्तूबर 2020
वर्ष 36 : अंक 10

परम सुहृद पाठक-गण,

सप्रेम नमस्कार।

आशा है यह जागरण पत्रिका आपको अच्छी लगती होगी। कृपया पढ़ने के बाद आप अपने मित्रों सहयोगियों को भी पाथेय कण पढ़ने को दें। राष्ट्रीय विचारों को आगे बढ़ाने में आपका यह सहयोग अपेक्षित है।

पत्रिका की सामग्री को अधिक उपयोगी तथा रुचिकर बनाने के लिए अपने सुझाव हमें पत्र अथवा ई-मेल से भेज सकते हैं।

जय श्रीराम।

आपका
सम्पादक

सहयोग राशि

एक वर्ष ₹ 150/- पन्द्रह वर्ष ₹1500/-

प्रबंधकीय कार्यालय

'पाथेय भवन' 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र,
अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर,
जयपुर-302017 (राज.)
सम्पर्क : 7976582011, 9414447123, 9929722111
Website: www.patheykan.in
E-mail: patheykan@gmail.com

कृषि क्षेत्र में मौलिक सुधार

गत जून माह में भारत सरकार ने 3 अध्यादेशों द्वारा कृषि क्षेत्र में मौलिक सुधारों का आगाज किया था, जो संसद के मानसून में पास हो गए। नए प्रावधानों को जानने से पहले की किसान की वर्तमान जमीनी हकीकत को समझना उपयोगी होगा, तभी हम इन कानूनों की आवश्यकता ठीक ठीक समझ पाएंगे।

1990 में एक फिल्म आई थी, ''जीने दो'', जिसकी एक वीडियो क्लिप इन दिनों सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रही है। इसमें दिखाया गया है कि किसान अपनी फसल मंडी में लाकर 2-3 दिन इंतजार करता है, तब मंडी का इंस्पेक्टर आता है और किसान की स्थिति (छोटा किसान-जमींदार) को देख अनाज का दाम तय करता है। आज भी छोटे किसान की मंडी में वास्तविक स्थिति ऐसी ही है। आज भी अनाज छनाई के नाम पर 10% फसल गायब हो जाएगी और तुलाई के महीनों बाद रकम उसके बैंक खाते में आएगी। इस रकम में से 11-15% राशि मंडी शुल्क, ग्राम विकास फंड, आढ़तिया कमीशन, तुलाई-हम्माली खर्च आदि के नाम पर कट जाएगी।

सरकारों ने साठ-सत्तर के दशक में एपीएमसी एक्ट किसान को शोषण से बचाने के नाम पर बनाया और इसी कानून के कारण किसान बेहाल है। वह अपनी फसल को मंडी से बाहर नहीं बेच सकता। यदि किसी फूड प्रोसेसिंग कम्पनी या बड़े दुकानदार को कृषि उत्पाद खरीदना हो तो वह किसान से नहीं खरीद सकता, उसे मंडी के आढ़तियों से ही माल खरीदना होगा। यह जानकर आश्चर्य होगा कि सरकार के आदेश पर न्यूनतम समर्थन मूल्य पर भारतीय खाद्य निगम जो गेहूँ, चावल खरीदता है, वह भी किसानों से नहीं, बल्कि इन आढ़तियों से ही खरीदता है, वह भी सालाना 10000-15000 करोड़ कमीशन देकर। चूंकि गेहूँ, चावल की अधिकांश सरकारी खरीद पंजाब तथा हरियाणा से होती है, वहाँ के आढ़तिये न केवल आर्थिक रूप से सक्षम हैं बल्कि सभी दलों में प्रभाव भी रखते हैं। अग्रिम कर्ज द्वारा इनकी छोटे किसानों (भारत के 85% किसान 2 हेक्टेयर से कम जोत वाले तथा 10% किसानों की जोत 2-4 हेक्टेयर मात्र है) पर गहरी पकड़ है। इस सबसे स्पष्ट है कि कृषि तथा किसान कल्याण के नाम पर लाखों करोड़ के वार्षिक बजट का अधिकांश हिस्सा ये 5% बड़े किसानों, दलालों, मंडी समिति के अधिकारियों और राजनीतिक आकाओं द्वारा हजम किया जा रहा है। यदि ये वर्तमान व्यवस्थाएं वास्तव में किसान हित वाली थी तो आजादी के 73 वर्ष बाद भी किसान बेहाल तथा आढतिये, कागजों पर खेती करने वाले अधिकारी-राजनीतिज्ञ करोड़पति, अरबपति नहीं होते।

कृषि उपज व्यापार और वाणिज्य (संवर्धन और सुविधा) बिल 2020 किसान द्वारा फसल को मंडी में बेचने की मजबूरी को समाप्त करता है ताकि किसान अपनी मर्जी से जब-जहां-जिसे चाहे (खेत में,मंडी में, खुले बाजार में अथवा जिले →

अष्टौ गुणा पुरूषं दीपयन्ति प्रज्ञा सुशीलत्वदमौ श्रुतं च।
पराक्रमश्चबहुभाषिता च दानं यथाशक्ति कृतज्ञता च।।

आठ गुण पुरूष को सुशोभित करते है - बुद्धि, सुन्दर चरित्र, आत्म नियन्त्रण, शास्त्र-अध्ययन, साहस, मितभाषिता, यथा शक्ति दान और कृतज्ञता। मनुष्य को इन गुणों को अपने जीवन में उतारना चाहिए।

आगामी पक्ष (16-31 अक्तूबर 2020) *के विशेष अवसर*

{ आश्विन (अधिक) अमावस्या से आश्विन पूर्णिमा तक }

जन्म दिवस

20 अक्तूबर (1914) – आचार्य तुलसी जयन्ती

21 अक्तूबर (1925) – हिंदू संस्कृति के संवाहक डॉ. हरवंशलाल ओबराय का जयन्ती

26 अक्तूबर (1270) – संत नामदेव की जयंती

27 अक्तूबर (1670) – वीर बन्दा बैरागी की जयन्ती

28 अक्तूबर (1867) – भगिनी निवेदिता की जयन्ती

30 अक्तूबर (1909) – वैज्ञानिक डॉ. होमी भाभा की जयन्ती

30 अक्तूबर (1919) –मोरोपंत जी पिंगले की जयन्ती

31 अक्तूबर (1875) – लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती (राष्ट्रीय एकता दिवस)

आश्विन शुक्ल 1 (17 अक्तूबर) – महाराजा अग्रसेन जयन्ती

आश्विन शुक्ल 10 (26 अक्तूबर)– मध्वाचार्य जयन्ती (वि. 1376 यु. 4421), शंकर देव जन्म (वि. 1505 यु. 4550), सम्राट हेमचंद्र (हेमू) की जयन्ती (सन1501)

आश्विन पूर्णिमा(31 अक्तूबर) – वाल्मीकि जयंती

बलिदान दिवस/पुण्यतिथि

16 अक्तूबर (1799) – वीर कट्ट बोम्मन को फांसी

24 अक्तू. (2006) – गांधीवादी चिंतक धर्मपाल की पुण्यतिथि

अन्य

17 अक्तूबर (1947) – श्री गुरुजी की कश्मीर-राजा हरि सिंह से भारत में विलय के लिए ऐतिहासिक भेंट

26 अक्तूबर (1947) – जम्मू-कश्मीर का भारत में विलय

29 अक्तूबर (1915) – अफगानिस्तान में पहली आजाद हिंद सरकार की स्थापना

30 अक्तूबर (1990) – श्री राम जन्मभूमि पर कार सेवा हुई

आश्विन शुक्ल 1 (17 अक्तूबर) – नवरात्रा स्थापना

आश्विन शुक्ल 8 (24 अक्तूबर) – दुर्गाष्टमी, सरस्वती पूजन

आश्विन शुक्ल 10(26 अक्तूबर) – लाचित बड़फुकन की मुगलों पर विजय (1670), दिवेर युद्ध में महाराणा प्रताप की विजय (1582), राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना (1925), राष्ट्र सेविका समिति की स्थापना (1936), विजया दशमी (दशहरा)

आश्विन शुक्ल 11 (27 अक्तूबर)– श्रीराम-भरत मिलाप

→ राज्य के बाहर भी) बेच सकता है ताकि उसे अपनी फसल का बाजार भाव से मूल्य मिल सके, वह भी बिना किसी टेक्स कटौती के। कृषक (सशक्तिकरण एवं संरक्षण) कीमत आश्वासन और कृषि सेवा करार बिल 2020 किसान को भविष्य में खरीददार से अनुबंध करके बाजार की अनश्चितताओं से मुक्ति तथा बाजार की मांग के अनुसार खेती करने की आजादी देता है। अनुबंधित खेती के अन्तर्गत पेप्सीको तथा हिन्दुस्तान यूनिलीवर जैसी कम्पनियां पंजाब, हरियाणा, प.बंगाल सहित अनेक राज्यों में आलू-टमाटर आदि उत्पादन करवा तथा खरीद रही है।

किसान की जमीन सुरक्षित रखने के लिए यह कानून अनुबंध करने वाली कम्पनी को जमीन पर कोई स्थाई निर्माण करने, जमीन को गिरवी रखने अथवा विक्रय को प्रतिबंधित करता है। आवश्यक वस्तु अधिनियम (संशोधन) बिल लाइसेंस परमिट राज में कृषि उत्पादों पर लगाई गई स्टाक सीमाओं को समाप्त करता है, ताकि गोदाम-कोल्ड स्टोरेज निर्माण में निजी निवेश आकर्षित हो जिससे न केवल फलों-सब्जियों सहित कृषि उत्पादों की बर्बादी रुकेगी बल्कि किसान-उपभोक्ता हितों के बीच सामन्जस्य बनेगा। सरकार ने यह भी आश्वासन दिया है कि न्यूनतम समर्थन मूल्य पर सरकारी खरीद की वर्तमान व्यवस्था जारी रहेगी।

स्वयं कांग्रेस पार्टी ने 2019 के लोकसभा चुनावों से पहले जारी अपने घोषणा पत्र में एपीएमसी कानून को समाप्त करने तथा कृषि उत्पादों के निर्यात सहित अन्तर्राज्यीय परिवहन तथा अबाधित व्यापार का मार्ग प्रशस्त करने का आश्वासन दिया था। इसलिए इन प्रावधानों का विरोध केवल विरोध के लिए तथा किसानों की राजनीति करने वालों के द्वारा प्रभावशाली बिचौलियों का हित साधने के लिए किया जा रहा है। कुछ विपक्षी दलों द्वारा भ्रम फैलाकर किसानों को भ्रमित कर प्रदर्शन करवाना, हमें सीएए के दिन याद दिलाता है, जब स्वार्थी तत्वों ने मुसलमान बंधुओं को बरगलाया कि यदि तुम घर से निकलकर सरकार का विरोध नहीं करोगे तो तुम्हारी नागरिकता समाप्त हो जाएगी।

किसान का उत्पाद सीधा उपभोक्ता तक पहुँचाने के कितने लाभ हैं, अमूल इसका सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है, जिसने किसानों की आय तथा उपभोक्ता के लिए उचित मूल्य, दोनों सुनिश्चित किए। आजादी के बाद पहली बार कृषि में मौलिक सुधार किए जा रहे हैं जो किसान को मंडी माफिया से मुक्त करने, किसान को फसल के दामों की जोखिम (अनिश्चितता) समाप्त करने, कृषि उत्पादों पर लागू स्टाक सीमाओं को समाप्त करने, कृषि उत्पादों के भंडारण, परिवहन तथा प्रसंस्करण (प्रोसेसिंग) में निवेश द्वारा कृषि को उपभोक्ता, बाजार तथा उद्योगों से जोड़ने का मार्ग प्रशस्त करेगा। इससे उन्नत तकनीक द्वारा कृषि उत्पादन बढ़ेगा, एक देश-एक बाजार की कल्पना मूर्त रूप लेगी और अन्ततोगत्वा किसान, उपभोक्ता तथा देश लाभान्वित होंगे। ■

खुलने लगे हैं दिल्ली दंगों की साजिश के राज

दिल्ली पुलिस द्वारा गत फरवरी में हुए साम्प्रदायिक दंगों के सिलसिले में की गई जांच एवं न्यायालय में प्रस्तुत की गई चार्जशीट के बाद दंगों के पीछे की साजिश की परतें खुलने लगी हैं।

दिल्ली के कड़कड़डूमा कोर्ट में प्रस्तुत की गई सत्रह हजार पृष्ठों की चार्जशीट में मुख्य आरोपी आप पार्टी के पूर्व पार्षद ताहिर हुसैन, राजद की दिल्ली युवा इकाई के अध्यक्ष मीरान हैदर, पिंजड़ा तोड़ ग्रुप की गुलफिशा फातिमा आदि 15 लोग हैं। अब तक कुल 21 आरोपियों को गिरफ्तार किया जा चुका है।

न्यायालय में प्रस्तुत चार्जशीट से स्पष्ट है कि दंगों के कई हफ्तों पूर्व से ही हथियार, पत्थर, शस्त्र, गोलाबारूद, बोतल पेट्रोल बम आदि एकत्रित किये जा रहे थे। इन दंगों को इस्लामी संगठन पीएफआई एवं अन्य कई समूहों द्वारा धन मुहैया कराया गया। यह अफवाह फैलाई गयी कि सरकारी नीतियां एवं निर्णय अल्पसंख्यक–विरोधी विशेषकर मुस्लिम–विरोधी हैं।

जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली के पूर्व छात्र उमर खालिद को हाल ही में दिल्ली पुलिस ने इन दंगों की साजिश रचने के आरोप मे गिरफ्तार किया था। यह गिरफ्तारी आतंकवाद विरोधी कानून 'गैर कानूनी गतिविधि (रोकथाम) अधिनियम (यूएपीए) के अन्तर्गत की गई। बता दें कि गत फरवरी में उत्तर–पूर्वी दिल्ली में हुए साम्प्रदायिक दंगों में मारपीट, आगजनी, पत्थरबाजी और गोलीबारी तक हुई। 53 लोग मारे गये तथा 583 लोग घायल हुए। घरों, वाहनों, दुकानों, धार्मिक स्थानों को आग के हवाले कर दिया गया। मृतकों में एक पुलिसकर्मी व एक खुफिया ब्यूरो का अधिकारी भी शामिल थे। लाशें खुली नालियों में पायी गयी।

विदेशों से करोड़ों रुपये आये

दंगों के लिये ओमान, कतर, यूएई और सऊदी अरब जैसे देशों से भी धन आया था। दिल्ली पुलिस का दावा है कि दंगे होने से पूर्व दंगों के आरोपियों के खातों में तथा नकद भी कुल एक करोड़, बासठ लाख, छियालीस हजार तिरेपन रुपये आये। यह धन दिल्ली में दंगे कराने में खर्च किया गया। इन पैसों से प्रदर्शन हेतु सामग्री एवं हथियार भी खरीदे गये। पुलिस के अनुसार ताहिर हुसैन, मीरान हैदर, इशरत जहां, शिफा उर रहमान, खालिद सैफी के खातों में धन आया। सबसे ज्यादा धन (1 करोड़ 32 लाख से ज्यादा) आम आदमी पार्टी के निलंबित पार्षद ताहिर हुसैन के खाते में जमा किया गया। कांग्रेस की पूर्व पार्षद इशरत जहां के खाते में तथा बतौर नकद पांच लाख से अधिक रुपये आये।

भारत को बदनाम करने का षड़यंत्र

पुलिस की जांच में सामने आया है कि ये दंगे पूर्व योजनानुसार उसी समय किये गये जब अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प भारत आये थे। विश्वभर का मीडिया तब भारत में रहने वाला था। दंगों का मकसद था भारत को विश्व में बदनाम करने का, ताकि यह साबित कर सकें कि यहां मुसलमानों के साथ अत्याचार हो रहा है।

दंगों का साजिशकर्ता उमर खालिद

पुलिस ने दावा किया है कि दिल्ली दंगों की साजिश उमर खालिद तथा दो अन्य लोगों द्वारा रची गई थी। पुलिस का आरोप है कि खालिद ने दो स्थानों पर भड़काऊ भाषण दिये तथा लोगों को सड़क पर उतरने एवं रास्ते अवरूद्ध करने के लिये उकसाया था। उमर खालिद के मोबाइल में 40 जी बी डेटा दंगों से संबंधित मिला है। खालिद दिसम्बर, 2019 से ही दंगों की साजिश रचने में जुट गया था। वह व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से भी दंगों की भूमिका तैयार कर रहा था। पुलिस ने इन दंगों को लेकर लगभग 11 लाख इलेक्ट्रानिक व दस्तावेजी साक्ष्य जुटाए हैं।

पिंजरा तोड़ के सदस्यों द्वारा खुलासा

दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा के अनुसार पिंजरा तोड़ ग्रुप के सदस्यों ने उमर खालिद की साजिश के बारे में काफी बातें पुलिस को बताई हैं। हालात ऐसे पैदा कर दिये गये कि आम लोगों में टकराव हो और दंगे भड़क जाये। खालिद के कहने पर ही धरना स्थल पर ज्यादा से ज्यादा महिलाओं को इकट्ठा किया गया था।

अरबन नक्सल्स की भूमिका

दिल्ली पुलिस ने जो पूरक आरोप पत्र न्यायालय में दिल्ली दंगों के संबंध में प्रस्तुत किया है, उससे अरबन–नक्सल्स की भूमिका भी दिल्ली दंगों में सामने आयी है।

ये नहीं सुधरेंगे

भारत में एक लॉबी ऐसी भी है जो आतंकवादियों, दंगाईयों, देशविरोधियों की सहायता करने को हर समय तत्पर रहती है।

गत 16 सितम्बर को जैसे ही दिल्ली पुलिस ने दिल्ली में हुए साम्प्रदायिक दंगों के संबंध में गहन जांच कर पर्याप्त साक्ष्यों के आधार पर 15 आरोपियों के विरुद्ध न्यायालय में चार्जशीट प्रस्तुत की, उसी समय प्रशान्त भूषण व उनके साथियों ने प्रेस–कांफ्रेंस कर दावा किया कि दिल्ली पुलिस निरपराधियों को फंसा रही है। जिनको आरोपी बनाया गया है, वे बेचारे तो सीएए तथा एनआरसी के विरुद्ध शांतिपूर्ण विरोध जता रहे थे।

शांतिभूषण ने तो पुलिस जांच को ही आपराधिक षड़यंत्र बता दिया। लगता है कि शांति भूषण जैसे लोग भारत की न्याय व्यवस्था पर भी भरोसा नहीं करने का माहौल बना रहे हैं।

कौन है उमर खालिद

दिल्ली के खूनी दंगों के साजिशकर्ता के रूप में गिरफ्तार उमर खालिद जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय (जे.एन.यू.) का वही छात्र है जिस पर आतंकी अफजल गुरु की बरसी पर आयोजित कार्यक्रम में देश विरोधी नारे लगाने का आरोप है।

'भारत तेरे टुकड़े होंगे...... जैसे नारों को देश अभी भूला नहीं है। खालिद को पकड़ने के लिये दिल्ली पुलिस ने कई जगहों पर छापेमारी की थी, परन्तु वह फरार हो गया था।

माना जाता है कि खालिद का संबंध आतंकी संगठन से है। खबरें यह भी थी कि खालिद कई विश्वविद्यालयों में आतंकी अफजल गुरु का गुण-गान करवाना चाहता था। जे.एन.यू. जैसा कार्यक्रम उसने देश के १८ विश्वविद्यालयों में आयोजित कराने की योजना बनाई थी।

जे.एन.यू. के छात्रों के अनुसार खालिद कई अवसरों पर कश्मीर की आजादी की मांग उठाता रहा है। २६ जनवरी, २०१५ को इन्टरनेशनल फूड फेस्टिवल के बहाने कश्मीर को अलग देश दिखाकर उसका स्टाल भी खालिद ने लगाया था।

२०१० में छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा में नक्सलवादियों ने जब सी.आर.पी.एफ. के जवानों की हत्या कर दी थी तो उस पर जश्न मनाने वाले छात्रों का अगुआ खालिद ही था।

जे.एन.यू. के जानकार कहते हैं कि खालिद ने कैम्पस में अपने साथियों के साथ मिलकर हिन्दू देवी-देवताओं की आपत्तिजनक तस्वीरें लगाकर घृणा फैलाने का प्रयास किया था। जब नवरात्रों में पूरा देश मां दुर्गा की पूजा-आराधना कर रहा होता है उस समय कैम्पस में 'महिसासुर शहादत दिवस' का आयोजन भी खालिद और उसके साथी करते रहे हैं।

उमर खालिद सी.पी.आई. माओवादी समर्थित छात्र संगठन डी.एस.यू. (डेमोक्रेटिक स्टूडेन्ट्स यूनियन) से जुड़ा रहा है। अफजल गुरु की घटना से पूर्व वह जे.एन.यू. के स्कूल ऑफ सोशल साइन्स से इतिहास में पीएचडी कर रहा था। उस घटना के बाद उसको विश्वविद्यालय से निलंबित करते हुए उसके पीएचडी पंजीयन को रद्द कर दिया गया था।

१० अगस्त, २०१८ को दिल्ली के 'कांस्टिटयूशन क्लब' के बाहर खालिद को नवीन दलाल व एक अन्य व्यक्ति ने हमला कर गोली मार दी थी। परन्तु, वह बाल बाल बच गया था। नवीन दलाल के एक साथी विक्रम यादव ने दलाल का बचाव करते हुए कहा था कि दलाल का खालिद से कोई व्यक्तिगत विवाद नहीं था, वह परेशान था क्योंकि इन लोगों ने यूनिवर्सिटी में देश विरोधी नारे लगाये थे तथा इस पर कोई कार्यवाही नहीं हुई थी। बाद में दलाल व उसके साथी को गिरफ्तार कर लिया गया था।

खालिद पर देशद्रोह, हत्या, हत्या के प्रयास, धर्म के आधार पर विभिन्न समूहों के बीच दुश्मनी को बढ़ावा देने और दंगा करने के लिये मामला दर्ज है।

जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय की छात्राओं देवांगना कालिता तथा नताशा नरवाल एवं जामिया मिल्लिया की छात्रा गुलफिशा फातिमा को पुलिस ने जाफराबाद हिंसा मामले में आरोपी बनाकर यूएपीए के अन्तर्गत गिरफ्तार किया है। दिल्ली पुलिस के अनुसार देवांगना कालिता तथा नताशा नरवाल ने दंगों में अपनी भागीदारी स्वीकार कर ली है। इन दोनों ने अपने संरक्षक के तौर पर अर्थशास्त्री जयंत घोष, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्राध्यापक एवं एक्टिविस्ट अपूर्वानंद, डॉक्यूमेंट्री फिल्म बनाने वाले राहुल राय, सीताराम येचुरी तथा योगेन्द्र यादव का नाम लिया है। छात्राओं का कहना है कि इन लोगों ने सीएए के खिलाफ प्रदर्शन करने और किसी भी हद तक जाने की बात कही थी।

जामिया मिलिया के छात्र गिरफ्तार

दिल्ली दंगों के सिलसिले में जामिया मिल्लिया की छात्रा गुलफिश फातिमा को पुलिस ने पहले ही गिरफ्तार कर लिया था। बाद में, दिल्ली पुलिस ने जामिया के ही छात्र मीरान हैदर और छात्रा सफ़ूरा ज़रगर को भी साम्प्रदायिक हिंसा से जुड़े एक मामले के अन्तर्गत गिरफ्तार कर मामला दर्ज किया है। ज़रगर जामिया समन्वय समिति की मीडिया समन्वयक है तथा हैदर इस समिति का सदस्य है।

हैदर जो कि 35 वर्ष का हो चुका है, अभी भी बतौर शोध-छात्र जामिया में रजिस्टर्ड है। हैदर राष्ट्रीय जनता दल (राजद) की दिल्ली में युवा इकाई का अध्यक्ष है। दिल्ली में हुए साम्प्रदायिक दंगों के लिये कैसे पूर्व योजना बनायी गयी, धन कहां से आया और दंगों का उद्देश्य क्या था, यह अब स्पष्ट होता जा रहा है।

लपेटे में खुर्शीद, प्रशांत भूषण, वैज्ञानिक गौहर रजा भी

कांग्रेसी नेता सलमान खुर्शीद, वकील प्रशांत भूषण, सीपीआई नेता कविता कृष्णन, छात्र नेता कवलप्रीत कौर, वैज्ञानिक गौहर रजा उन लोगों में हैं जिनके बारे में आरोपियों ने पुलिस को दिए बयान में कहा है कि इन लोगों ने भी भड़काऊ भाषण दिए तथा मुसलमानों को धर्म के नाम पर संघर्ष करने के लिए उत्तेजित किया। ■

– **रामस्वरूप अग्रवाल**, जयपुर

जन्म दिवस 9 अक्तूबर पर विशेष

भारत के मिसाइल मैन – डा.अब्दुल कलाम

देश के सर्वोच्च सम्मान ''भारत रत्न'' से सम्मानित डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम भारत के प्रख्यात वैज्ञानिक होने के साथ–साथ भारत के 11वें एवं पहले गैर राजनीतिज्ञ राष्ट्रपति थे, जिन्हें ''मिसाइल मेन'' के नाम से भी जाना जाता है। बच्चों और विद्यार्थियों पर अतीव स्नेह वर्षा करने वाले लोकप्रिय डॉ. कलाम का जन्म 15 अक्तूबर 1931 को धनुषकोडी गांव (रामेश्वरम–तमिलनाडु) के एक गरीब परिवार में हुआ था। उनके शिक्षक इयादुराई सोलोमन ने उनसे कहा था कि ***जीवन में सफलता तथा अनुकूल परिणाम प्राप्त करने के लिए तीव्र इच्छा, आस्था, अपेक्षा इन तीन शक्तियों को भली–भांति समझ लेना और उन पर प्रभुत्व स्थापित करना चाहिए।*** *प्राथमिक शाला के बालक अब्दुल कलाम ने अपने अध्यापक के शब्दों को जीवन का मंत्र बना लिया।*

इन्होंने चार दशक तक रक्षा अनुसंधान विकास संगठन (डीआरडीओ) तथा भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) में वैज्ञानिक के रूप में काम करते हुए बैलेस्टिक मिसाइल तथा सेटेलाइट प्रक्षेपण यान प्रोद्योगिकी के विकास में भारी योगदान दिया जिसके कारण इन्हें मिसाइल मैन के रूप में जाना जाता है। 1998 में पोकरण–द्वितीय परमाणु परीक्षण में भी आपने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। डॉ.कलाम जीवन पर्यन्त शिक्षा, लेखन और सार्वजनिक सेवा से जुड़े रहे। 27 जुलाई 2015 को भारतीय प्रबंध संस्थान शिलांग में एक व्याख्यान देते समय प्राणघातक दिल का दौरा पड़ा, जिसमें सादगी और विनम्रता की प्रतिमूर्ति डॉ.कलाम की मृत्यु हो गई। डॉ. अब्दुल कलाम का जीवन देशवासियों विशेष रूप से बच्चों और युवाओं के लिए हमेशा प्रेरणा का स्रोत रहा है। प्रस्तुत हैं उनके जीवन से जुड़े कुछ प्रेरक प्रसंग।

जिन दिनों डॉ. कलाम वैज्ञानिक के रूप में काम करते थे, एक बार उनकी टीम के एक सदस्य ने घर जल्दी जाने की अनुमति मांगी ताकि वो अपने बच्चों को एक प्रदर्शनी में ले जा सके। लेकिन व्यस्तता के कारण वो ये बात भूल गया। शाम को पश्चाताप करता हुआ जब वो थोड़ी देर से घर पहुंचा तो पता चला कि डॉ. कलाम बच्चों को प्रदर्शनी दिखाने ले गए हैं।

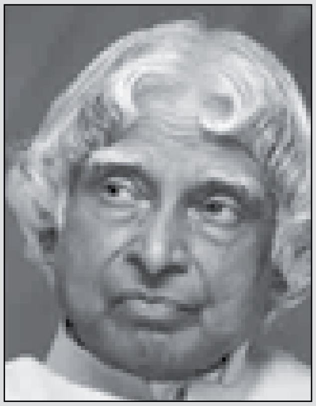

डा. अब्दुल कलाम

जब डॉ. कलाम डीआरडीओ में थे तो किसी भवन की सुरक्षा के लिए उसकी बाहरी दीवारों के ऊपर कांच के टुकड़े लगाने का सुझाव आया। पर उन्होंने इसे यह कहते हुए रद्द कर दिया कि ऐसा करने से पक्षी जब दीवार पर बैठेंगे तो उन्हें चोट पहुँच सकती है।

एक बार डॉ. कलाम जब स्कूल के बच्चों को भाषण दे रहे थे तभी बिजली में कुछ गड़बड़ी हो गयी । डॉ. कलाम उठे और सीधा बच्चों के बीच चले गए और उन्हें घेर कर खड़े हो जाने के लिए कहा। इस तरह से उन्होंने लगभग 400 बच्चों के साथ बिना माइक के संवाद किया।

एक बार कक्षा 6 के एक छात्र ने ''विंग्स ऑफ फायर'' किताब पढ़ने के बाद डॉ. कलाम का एक स्केच बनाया। परिवार वालों ने प्रोत्साहित किया कि इसे राष्ट्रपति को भेजो। लड़के ने सोचा इससे क्या होगा, ये तो उन्हें मिलेगा भी नहीं, पर फिर बहुत जोर डालने पर उसने स्केच भेज दिया। कुछ दिन बाद उसे डॉ. कलाम का अपने हाथों से लिखा संदेश तथा हस्ताक्षर किया हुआ धन्यवाद का पत्र मिला।

जब डॉ. कलाम डीआरडीओ में थे तब उन्हें एक महाविद्यालयी कार्यक्रम के लिए मुख्य अतिथि के रूप में निमंत्रित किया गया था। लेकिन डॉ कलाम पिछली रात में ही परिसर का चक्कर लगाने पहुँच गए, वहाँ जाकर उन्होंने कहा कि वो मेहनत करने वाले वास्तविक लोगों से मिलना चाहते थे इसलिए इस वक्त आ गए।

आईआईटी (बीएचयू) के दीक्षांत समारोह में डॉ. कलाम मुख्य अतिथि थे। जब वे मंच पर पहुंचे तो देखा कि उनके लिए जो कुर्सी लगी है वो बाकी कुर्सियों से बड़ी है। उन्होंने तुरंत उस पर बैठने से मना कर दिया और कुलपति को उस पर बैठने का आग्रह किया। जब कुलपति उस पर नहीं बैठे तो सामान्य कुर्सी मंगाई गयी और तब सब लोग बैठ पाए।

राष्ट्रपति बनने के बाद भी उनका चिन्तन मानवता के लिए ही था। उन्होंने याहू पर एक प्रश्न पूछा, ''अपने ग्रह को आतंकवाद से मुक्त कराने के लिए हम क्या कर सकते हैं।''

जब कोई राष्ट्रपति बन जाता है तो सरकार उसकी सारी ज़रूरतों का ध्यान रखती है, पद से हटने के बाद भी। इसलिए डॉ. कलाम ने अपनी सारी बचत ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी सुविधायें प्रदान करने वाले संगठन को दान कर दी।

राष्ट्रपति बनने के कुछ दिन बाद वो किसी कार्यक्रम में शामिल होने केरल राज भवन, त्रिवेंद्रम गए। उनके पास अपनी तरफ से 'राष्ट्रपति के मेहमान' के रूप में किन्ही दो लोगों को बुलाने का अधिकार था, और आप जान कर हैरान होंगे कि उन्होंने किसे बुलाया–एक मोची को और एक छोटे से होटल के मालिक को। दरअसल, डॉ. कलाम वैज्ञानिक के रूप में काफी समय त्रिवेन्द्रम में रहे थे, तभी से वे इन लोगों को जानते थे। किसी नेता या सेलेब्रिटी को बुलाने की बजाये उन्होंने इन आम लोगों को महत्व दिया।

जन्म दिवस 5 अक्तूबर पर विशेष

केरल में हिन्दू शक्ति के सर्जक भास्कर राव कलम्बी

क्षेत्रफल में बहुत छोटा होने पर भी संघ की सर्वाधिक शाखाएं केरल में ही हैं। इसका बहुतांश श्रेय 05 अक्तूबर, 1919 को रंगून (बर्मा) के पास टिनसा नगर में जन्मे श्री भास्कर राव कलंबी को है। उनके पिता श्री शिवराम कलंबी वहां चिकित्सक थे। रंगून में प्राथमिक शिक्षा पाकर वे मुंबई आ गये।

मुंबई के प्रथम प्रचारक श्री गोपालराव येरकुंटवार के माध्यम से वे 1935 में शिवाजी उद्यान शाखा में जाने लगे। डॉ. हेडगेवार जी के मुम्बई आने पर वे प्रायः उनकी सेवा में रहते थे।

भास्कर राव कलम्बी

1940 में उन्होंने तृतीय वर्ष का प्रशिक्षण लिया, जहां पूज्य डॉक्टर जी ने अपना अंतिम बौद्धिक दिया था। वहीं उन्होंने अपने जीवन की दिशा निर्धारित कर ली।

1945 में लॉ कॉलेज से वकालत उत्तीर्ण कर वे प्रचारक बने और उन्हें कोचि भेजा गया। 1964 में केरल अलग राज्य बनने पर वे उसके प्रथम प्रांत प्रचारक बनाये गये। तब से 1982 तक केरल ही उनका कार्यक्षेत्र रहा। वे केरल से पूर्णतः समरस हो गये। उनकी भाषा, खानपान और वेशभूषा देखकर कोई नहीं कह सकता था कि वे यहां के मूल निवासी नहीं हैं।

उन दिनों वहां हिन्दुओं का भारी उत्पीड़न होता था। गांव में यदि हिन्दू दुकान पर बैठकर चाय पी रहा हो और ईसाई या मुसलमान आ जाये, तो उसे खड़ा होना पड़ता था। शासन भी पूरी तरह हिन्दू विरोधी ही था। 1951 में ईसाइयों ने केरल में 105 मंदिर तोड़े थे। ऐसे वातावरण में काम करना सरल न था।

पर भास्कर राव जुझारू स्वभाव के थे। उन्होंने केरल के निर्धन मछुआरों के बीच में रात्रि शाखाए प्रारंभ कीं। इससे हिन्दुओं का स्वाभिमान जागा और वे ईंट का जवाब पत्थर से देने लगे। उन दिनों केरल में मार्क्सवाद का प्रभाव बढ़ा और वे भी शाखाओं पर हमले करने लगे। स्वयंसेवकों ने उन्हें उसी शैली में जवाब दिया। अनेक स्वयंसेवक बलिदान हुये, कई को लम्बी सजाएं हुई; पर 'न दैन्यम् न पलायनम्' के अनुगामी भास्कर राव पीछे नहीं हटे।

भास्कर राव ने संघ कार्य के लिये प्राथमिकता शहरों या सम्पन्न वर्ग को न देकर गांवों और निर्धन वर्ग को दी। इससे मछुआरे, भूमिहीन किसान, मजदूर, छोटे कारीगर, अनुसूचित जाति व जनजाति के बीच शाखाओं का विस्तार होकर संघर्षशील कार्यकर्ताओं की एक लम्बी शृंखला का निर्माण हुआ।

1971 में एक संघ शिक्षा वर्ग में उन्हें भीषण हृदय घात हुआ। 1971 में बाइपास सर्जरी और पर्याप्त विश्राम के बाद 1973 में उन्हें 'वनवासी कल्याण आश्रम' के संगठन मंत्री का कार्य दिया गया। भास्कर राव ने यहां भी कार्यकर्ताओं की सोच बदली। उन्होंने कहा कि ईसाई मिशनरियों की तरह वनवासियों की गरीबी और अशिक्षा का ढिंढ़ोरा पीटना बंद कर उनके गौरवशाली इतिहास और प्राचीन परम्पराओं को सबके सामने लाएं। इससे वनवासियों का स्वाभिमान जागा और उनमें से हजारों प्रचारक एवं पूर्णकालिक कार्यकर्ता बने। जनजातीय खेल प्रतियोगिताओं से भी सैकड़ों युवक व युवतियां काम में जुड़े।

आगे चलकर वे हृदय रोग के साथ ही कैंसरग्रस्त भी हो गये। अतः 1996 में उन्होंने सब दायित्वों से मुक्ति ले ली। मुंबई में चिकित्सा के दौरान जब उन्हें लगा कि अब शरीर में सुधार संभव नहीं है, तो वे आग्रहपूर्वक अपने सबसे पुराने कार्यक्षेत्र कोचि मे आ गये। 12 जनवरी, 2002 को प्रातः 8.30 बजे कोच्चि के संघ कार्यालय पर ही एक आदर्श स्वयंसेवक, कर्मनिष्ट प्रचारक तथा सफल समाजशिल्पी भास्कर राव ने संतोषपूर्वक अंतिम सांस ली।

उनके निधन का समाचार पाते ही केरल के कोने कोने से स्वयंसेवक कोचि पहुंचने लगे। 13 जनवरी की प्रातः तक उनके अंतिम दर्शनों के लिये स्वयंसेवकों का एक अटूट, अविरत क्रम चलता रहा। श्रद्धांजलि देने में महिलाओं की संख्या काफी अधिक थी, क्योंकि केरल के स्वयंसेवक परिवारों में भास्कर राव एक आदरणीय बुजुर्ग, पिता और बड़े भाई के नाते माने और जाने जाते थे। महिलाएं असाधारण रूप से अपने साथ छोटे-छोटे बच्चों को भी लाईं ताकि वे बच्चे भी भास्कर राव को अंतिम प्रणाम निवेदित कर सकें।

श्री मोहनराव भागवत (तत्कालीन सरकार्यवाह) ने अपने श्रद्धांजलि संदेश में कहा था कि भास्कर राव उन दुर्लभ वरिष्ठ अधिकारियों में से थे जिन्होंने संघ संस्थापक पूज्य डॉक्टर जी को देखा ही नहीं, अपितु उनके मार्गदर्शन और प्रेरणा से अपने जीवन की दिशा निर्धारित की। उनकी कार्यपद्धति और स्वभाव, कार्यकताओं के निर्माण की शैली, परिवारों से जुड़कर उनके सुख-दुःख से एकात्म होने का स्वाभाविक गुण, सब कुछ ऐसा था जो बरबस पुराने संघनिष्ठ कार्यकर्ताओं के मुंह से यह भाव अभिव्यक्त करवा देता था कि जिन्हें डॉ. हेडगेवार की कार्यशैली का प्रत्यक्ष अनुभव न रहा हो वे कुछ समय भास्कर राव के सान्निध्य में रहकर उस कार्यशैली का परिचय पा सकते हैं। ■

जन्म दिवस 9 अक्तूबर पर विशेष

संघ के गृहस्थ प्रचारक–भैयाजी दाणी

भैयाजी दाणी का जन्म नागपुर की उमरेड़ तहसील में 9 अक्तूबर, 1907 को हुआ था। उनका पूरा नाम प्रभाकर बलवन्त दाणी था। उनके पिता श्री बापूजी दाणी प्रखर राष्ट्रवादी नेता लोकमान्य तिलक के भक्त थे।

मैट्रिक की पढ़ाई करते समय वे संघ संस्थापक डॉक्टर हेडगेवार के सम्पर्क में आए। इस सम्पर्क का परिणाम यह निकला कि वे भी स्वयंसेवक बन गए। बाद में वे आगे की शिक्षा के लिए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में पढ़ने गए। काशी में पढ़ने के पीछे उनका उद्देश्य वहां संघ–कार्य प्रारम्भ करना था। शीघ्र ही विश्वविद्यालय में एक अच्छी शाखा शुरू हो गई। इस प्रकार महाराष्ट्र के बाहर किसी प्रांत में खुलने वाली वह प्रथम शाखा थी।

श्रीगुरुजी को संघ में लाए– काशी में रहते हुए उनका सम्पर्क श्री माधव सदाशिव गोलवलकर उपाख्य श्री गुरुजी से हुआ। श्री गुरुजी उन्हीं दिनों काशी विश्वविद्यालय में प्राध्यापक बने थे। भैयाजी उन्हें संघ से जोड़ने में सफल रहे। आगे चलकर श्री गुरुजी ही संघ के द्वितीय सरसंघचालक बने।

एलएलबी करने के बाद भैया जी गृहस्थी बन गए। किन्तु उन्होंने गृहस्थी को कभी भी संघ कार्य में आड़े नहीं आने दिया। इसका उदाहरण 1942 की एक घटना है। मध्य भारत में किसी कुशल कार्यकर्ता को लगाने की चर्चा चल रही थी। श्री गुरुजी ने भैया जी से पूछा– 'आपके विचार से मध्यभारत में किसे लगाना चाहिए ?'

भैया जी ने खूब विचार किया। अनेक कार्यकर्ताओं के बारे में सोचा। किन्तु उन्हें किसी को भी कार्य क्षेत्र से हटा पाना संभव नहीं लगा। तब वे बोले– 'ऐसा कार्यकर्ता तो आपके सामने खड़ा है।'

श्री गुरुजी समझ गए कि इस काम के लिए खुद भैयाजी तैयार हो गए हैं। फिर भी उन्होंने सोचा कि कहीं भैया जी ने जल्दबाजी में तो यह निर्णय नहीं कर लिया, इसलिए वे मंद–मंद मुस्करा कर बोले– 'पर वह तो घर–गृहस्थी वाला है?'

पर भैया जी अपने निर्णय से कहां डिगने वाले थे ? उन्होंने जोर देकर कहा– 'गुरुजी, घर–गृहस्थी की बाधा अब तक संघ–कार्य में कभी आड़े नहीं आई और न अब आएगी!'

इसके बाद वे श्री गुरुजी की आज्ञा से घर गए। परिजनों को समझाया। आवश्यक प्रबंध किए और मध्य भारत की ओर चल पड़े। इस तरह वे संघ के ऐसे प्रचारक बने जो गृहस्थ होते हुए भी पूरा समय देकर संघ कार्य में पूर्ण समर्पण के साथ जुटे रहे। आगे चलकर 1945 में वे संघ के सरकार्यवाह भी बने।

गांधी जी की हत्या के बाद कांग्रेसी गुण्डों ने उमरेड स्थित उनके घर को लूट लिया। इस पर भैयाजी स्थितप्रज्ञ की भांति शांत रहे। उन्हें अपने परिवार से अधिक श्रीगुरुजी और संघ कार्य की चिंता थी।

सत्ता की लालसा है तो संघ छोड़ दें– 1952 में देश के पहले आम चुनाव हुए। इनमें कुछ ऐसे स्वयंसेवक भी उम्मीदवार बने थे जिन्होंने देश–विभाजन की त्रासदी को झेला था, पीड़ितों की अथक सेवा की थी और त्याग के अनुपम उदाहरण सामने रखे थे। किन्तु इन चुनावों में वे जीत न सके। इससे कार्यकर्ताओं में घोर निराशा फैल गई।

वे पूछने लगे– 'क्या यही हमारी तपस्या का फल है? क्या यही हमारे कार्यों का मूल्यांकन है?' तब कार्यकर्ताओं की बैठक में भैयाजी ने पूछा–'क्या हम भूल गए कि संघ क्यों शुरू किया गया था? क्या हमने असहायों की सेवा सत्ता पाने के लिए की थी? संघ ने निरपेक्ष भाव से सेवा करना सिखाया है। **जिन्हें सत्ता की लालसा है और संघ की ओर भी इसी दृष्टि से देखते हैं, उन्हें संघ छोड़ देना ही श्रेयस्कर होगा।** संघ नए और उपयुक्त कार्यकर्ता तैयार करके सारा काम पुनः खड़ा कर लेगा, परन्तु ऐसी हीन भावना को कदापि आश्रय नहीं देगा।' बस फिर क्या था? सारा हो–हल्ला शांत हो गया और कार्यकर्ता नए उत्साह से संघ–कार्य में जुट गए। वे काम में आने वाली बाधाओं को दूर करने तथा रुठे हुए कार्यकर्ताओं को मनाने में बड़े कुशल थे। इसलिए कुछ लोग उन्हें ''मनों को जोड़ने वाला सेतु'' कहते थे।

संघ का लक्ष्य व्यक्ति–निर्माण– इसी समय संघ के स्वयंसेवक राष्ट्र जीवन के विविध क्षेत्रों में जाने लगे थे। ऐसे लोगों के प्रति आशा व्यक्त करते हुए भैयाजी ने कहा था–'संघ की प्रबल इच्छा है कि स्वयंसेवक जीवन के सभी क्षेत्रों में प्रवेश करें और अपने प्रभाव से राष्ट्र–जीवन के सभी क्षेत्रों में राष्ट्रोपकारी परिवर्तन लाएं। समाज की प्रगति के लिए उच्च गुणवत्ता वाले सुपात्र कार्यकर्ताओं को तैयार करने की दृष्टि से संघ व्यक्ति–निर्माण के कार्य पर सारा ध्यान केन्द्रित कर रहा है। यह कार्य पूर्ण करने हेतु अपरिमित श्रम और कष्ट सहन करने होंगे।'

1956 में भैया जी के पिताजी का देहान्त होने पर घर का कारोबार सम्हालने के लिए उन्हें सरकार्यवाह के दायित्व से मुक्त कर दिया गया। फिर भी वे 'नर केसरी प्रकाशन' से जुड़े रहे। 1962 में वे पुनः सरकार्यवाह बने। किन्तु अगले वर्ष वे हृदय रोग के शिकार हो गए। उनका स्वास्थ्य गिरता जा रहा था। तब 1965 में बालासाहब देवरस को सरकार्यवाह का दायित्व सौंपा गया। स्वास्थ्य ठीक न होने पर भी वे प्रवास करते रहे। 1965 में ही वे पुनः मध्यभारत के शिक्षा वर्ग (इन्दौर) में आए। वहीं अचानक बहुत अस्वस्थ हो कर 2 मई को वह कर्मवीर कर्मक्षेत्र में ही चल बसा। ■

रुक नहीं रहीं चीन की चालबाजियां

चीन सीमा पर तनाव घटाने के लिये जहां एक ओर बातचीत कर रहा है, वहीं इन बैठकों में बनी सहमति के अनुरूप आवश्यक कदम उठाने के स्थान पर नई-नई चालबाजियां चल रहा है। ताजा तरीन बातचीत चीनी सीमा पर मोल्डो में 21 सितम्बर को हुई। पहली बार भारत और चीन के बीच सैन्य और कूटनीतिक स्तर की संयुक्त बातचीत हुई, जिसमें सेन्य कमाण्डर के साथ विदेश विभाग के उप-सचिव ने भाग लिया। इस वर्ष जून महीने से अब तक कोर कमांडर स्तर की यह छठी बैठक थी।

गत 10 सितम्बर को मॉस्को में भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर और चीन के विदेश मंत्री की मुलाकात में भी इस विवाद को बातचीत द्वारा सुलझाने पर 5 सूत्री सहमति बनी थी, लेकिन जमीनी हकीकत में कोई बदलाव अब तक नहीं आया है। भारतीय तथा चीनी सेना आमने सामने हैं। कुछ स्थानों पर तो इनके बीच मात्र 200-300 मीटर की दूरी है।

वर्तमान विवाद के कारण – भारत और चीन के बीच 3488 किमी लम्बी वास्तविक नियंत्रण रेखा है और दुर्भाग्य से अथवा चीन की चालाकियों के कारण आजादी के 73 वर्षों बाद भी सीमा का निर्धारण नहीं हो पाया है। सीमा का औपचारिक निर्धारण करने में चीन ने कभी रुचि नहीं दिखाई, क्योंकि सीमा निर्धारण के बाद वह एक तरफा कार्रवाई करके अपनी सीमा का विस्तार नहीं कर पाएगा। तिब्बत पर कब्जे के बाद ही चीन सीमा क्षेत्रों में सड़क-रेल-पुलों जैसी आधारभूत संरचनाओं द्वारा अपनी सैन्य स्थिति निरंतर मजबूत करता रहा, लेकिन भारत की सरकारें चीनी नाराजगी के डर से चुपचाप देखती रही। 2014 के बाद सरकार के दृष्टिकोण में बड़ा बदलाव आया है। चीनी सीमा के समानान्तर बनी दरबुक-दौलतबेग ओल्डी रोड, श्योक नदी तथा गलवान नदी पर पुल तथा ऐसी ही अनेक सड़कों के बन जाने से भारतीय सेना की सीमा पर पहुँच की सुविधा तथा निगरानी क्षमता में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। चीन को भारत के ये बराबरी वाले कदम नागवार लगे। सीमा पर वर्तमान तनाव तथा चीन की आक्रामकता (डर) के पीछे एक कारण यह भी है।

गलवान में मुठभेड़ – जून मध्य में गलवान घाटी में हुई मुठभेड़ में भारत के 20 सैनिक शहीद हुए तथा चीन के 40-60 सैनिकों की गर्दन टूटने की खबर अलग अलग सूत्रों से निकल कर आ रही है। जुलाई के प्रथम सप्ताह में राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार तथा चीन के विदेश मंत्री के बीच बातचीत के बाद गलवान घाटी में सैनिक वापसी हुई। किन्तु अन्य क्षेत्रों में एलएसी पर तनाव बरकरार है। इस बीच चीन सीमा क्षेत्र में अपनी स्थिति मजबूत करने के लिये न केवल सैनिकों की संख्या में बढ़ोतरी कर रहा है बल्कि, टैंक तथा तोपखाना जैसे भारी सैन्य उपकरण तथा मिसाइल सिस्टम तैनात कर रहा है।

भारत न केवल चीन की इस धोखा नीति को देख रहा है, बल्कि उचित जवाबी कार्यवाही भी कर रहा है। भारत ने भी चीन के समान ही (40-50000) सैनिकों की तैनाती के साथ ही अपने टेंक, तोपखाने, मिसाइल सिस्टम तथा लड़ाकू विमान, हेलीकॉप्टर पर्याप्त मात्रा में सीमा पर तैनात कर दिये हैं।

संभवतः यह पहला अवसर है, जब चीन की चालबाजियों और सैन्य घुड़कियों का जवाब देने के लिये कोई देश उसके सामने खड़ा हुआ है। गलवान घाटी में मार खाने के बाद न केवल चीनी सैनिक बल्कि उनके उच्च अधिकारी तथा राष्ट्रपति शी जिनपिंग भी सदमे में हैं, भारतीय सेना के साथ सीधे मुकाबले से डरे हुये हैं।

भारत की रणनीतिक बढ़त– इसी क्रम मे 29-30 अगस्त की रात्रि में चीनी सैनिकों ने मई में किये गये अतिक्रमण जैसा ही प्रयास पुनः कर भारतीय सीमा की ऊँची चोटियों पर कब्जा करने का प्रयास किया। लेकिन सतर्क भारतीय सैनिकों ने चीन की मंशाओं को पहले ही भांप लिया और पेगांग के दक्षिण की सैन्य महत्व की हेलमेट टॉप, ब्लेक टॉप, मगर हिल, मुकपरी, रेजांग ला, रेचिन ला, तथा झील के उत्तर में फिंगर-4 के पड़ोस की पहाड़ी चोटियों पर कब्जा कर लिया। भारत की इस अनपेक्षित कार्रवाई से चीन हतप्रभ रह गया। चीन ने 6-7 सितम्बर को इन चोटियों पर कब्जा करने के लिए पुनः सैन्य टुकड़ियां भेजी लेकिन सतर्क भारतीय जवानों ने उनके सारे प्रयास विफल कर दिए। ऐसी भी सूचना है कि 29 अगस्त से 7 सितम्बर के बीच इन कार्रवाइयों में दोनों ओर के सैनिकों द्वारा चेतावनी स्वरूप 4 बार गोलियां भी चलाई गई।

असल में सीमा का यह भाग ऊँची पहाड़ियों वाला है, जहां सर्दी के मौसम में तापमान -40 डिग्री सेल्सियस (जमाव बिन्दु से 40 डिग्री नीचे) हो जाता है। अतः पारम्परिक रूप से दोनों ओर के सैनिक ठंड शुरू होने से पहले अपने-अपने क्षेत्रों में चले जाते हैं तथा अप्रेल-मई महीने से पुनः गश्त शुरू करते हैं। सीमा के दोनों ओर एक निश्चित क्षेत्र ''असैन्य क्षेत्र (नो मेन्स लैंड)'' घोषित है, जिसमें दोनों देशों के सैनिक गश्त करते हैं, लेकिन इस क्षेत्र में सैन्य पोस्ट का निर्माण वर्जित है। जैसा कि पाकिस्तान ने 1999 में कारगिल में किया था, इस साल गश्त शुरू होने से पहले ही चीन ने झील के उत्तरी भाग के असैन्य क्षेत्र में अपने सैनिकों को पहाड़ों की चोटियों पर बिठा दिया तथा भारतीय सैनिकों को फिंगर 4 से आगे गश्त की अनुमति नहीं दी। चीनी सैनिक ऊँचाई पर बैठकर न केवल भारतीय सैन्य गतिविधियों पर निगरानी करते बल्कि रणनीतिक रूप से लाभदायक तथा प्रभुत्व वाली स्थिति में थे। अतः जहां चीन लगातार बातचीत करता किन्तु अप्रेल से पहले वाली स्थिति बहाल करने के लिये कदम नहीं उठा रहा था।

इसलिये भारतीय सेना तथा सरकार ने मिलकर एक बड़ा तथा साहसिक निर्णय लिया और 29-30 अगस्त की रात्रि में पेगांग झील

आत्मनिर्भर भारत की दिशा में डीआरडीओ के बढ़ते कदम

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) रक्षा क्षेत्र में अपने अनुसंधानों द्वारा देश को आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। डीआरडीओ ने गत एक पखवाड़े में स्वदेशी लेजर गाइडेड ऐंटी टेंक गाइडेड मिसाइल, पृथ्वी–2 मिसाइल तथा लड़ाकू ड्रोन ''अभ्यास'' का सफलतापूर्वक परीक्षण किया है।

ऐंटी टेंक गाइडेड मिसाइल को अर्जुन टेंक से परीक्षण किया गया, किन्तु इसे कई प्लेटफार्म से लांच किया जा सकता है। इसकी मारक क्षमता 3किमी है तथा यह टैंक, कम ऊँचाई वाले हेलिकॉप्टर सहित गतिमान लक्ष्यों (मूविंग आब्जेक्ट) पर रात में भी अचूक प्रहार कर नष्ट करने में सक्षम है। सतह से सतह पर मार करने वाली पृथ्वी–2 मिसाइल परमाणु हथियार ले जाने तथा रात में भी लक्ष्य को भेदने की क्षमता रखती है। इसकी मारक क्षमता 350 किमी है। अभ्यास एक हाई स्पीड एक्सपेंडेबल एरियल टार्गेट है जिसका प्राथमिक उपयोग विभिन्न प्रकार की मिसाइल प्रणालियों के मूल्यांकन के लिए एक लक्ष्य के रूप में किया जाता है। इसके अलावा इसे अवरोधक (जैमर) प्लेटफार्म और दुश्मन को झांसा–प्रलोभन के लिए भी किया जा सकता है।

के दक्षिण की ऊँची पहाड़ियों (12000–18000 फीट ऊँची) पर चढ़कर उन चोटियों पर कब्जा कर लिया। अब चीन की बड़ी सैन्य छावनी (मोल्डो) भारतीय जवानों की निगरानी तथा मारक दूरी (फायरिंग रेंज) में आ गई है। चालबाज चीन ने पेगांग के उत्तर में अपना सैन्य प्रभुत्व जमाया था, उसके जवाब में झील के दक्षिण में भारतीयों ने उससे भी ज्यादा प्रभुत्व जमा लिया है। भारत ने इस बार सर्दियों में भी सैनिकों की वहाँ पर तैनाती की पूरी तैयारी कर ली है।

भारतीय सेना ने चीनी चालबाजियों तथा उसकी सलामी–स्लाइसिंग नीति (पड़ोसी देश की सीमा में 5 किमी घुस जाओ, बाद में बातचीत द्वारा 2 किमी पीछे हटो, इस प्रकार अपनी सीमा का 3 किमी विस्तार करो) का न केवल उचित प्रतिकार किया है, बल्कि उसे चेतावनी भी दी है कि भारतीय सैनिकों का पराक्रम विश्व में सर्वश्रेष्ठ है तथा नये भारत का राजनीतिक नेतृत्व भी देश की सम्प्रभुता के लिये कठोर साहसिक निर्णय लेने में सक्षम है। अब चीनी नेतृत्व भारतीय पक्ष की बात को बराबरी के साथ सुनने तथा तनाव कम करने के लिये जमीनी कदम उठाने को मजबूर है। संभवतः यह पहला अवसर है जब चीन कह रहा है कि भारत ने उसकी सीमा का अतिक्रमण किया है और उसे चीनी क्षेत्र खाली कर देना चाहिये।

साइबर जासूसी –चीन की चालबाजियां सीमा तक ही सीमित नहीं है। भारत पर मनोवैज्ञानिक दबाव बनाने के लिये वह हाइब्रिड युद्ध में संलग्न है जिसमें सूचनाओं की डिजिटल चोरी करना, उन सूचनाओं को तोड़मरोड़ कर उनका इस्तेमाल अपने हित में करना, अपनी सैन्य ताकत को बढ़ाचढ़ा कर बताना शामिल है। विश्वभर में लगे संचार साधनों के उपकरण बहुतायत में चीन निर्मित हैं। चीन ने 2017 में 'नेशनल इंटेलिजेंसी ला' लागू किया, जिसमें प्रावधान है कि जरूरत पड़ने पर सभी संस्थाओं, कम्पनियों और नागरिकों को सरकारी गुप्तचर एजेंसियों के लिये काम करना बाध्यकारी है। यही कारण है कि विश्वभर में हुआवे जैसी दूर संचार उपकरण बनाने वाली कम्पनी का बहिष्कार किया जा रहा है तथा चीनी मोबाइल एप्स पर प्रतिबंध लगाया गया है।

गत दिनों चीन की सरकार और चीन की कम्युनिस्ट पार्टी से जुड़ी जेनहुआ डाटा इन्फोर्मेशन टेक्नोलॉजी कम्पनी विश्व के प्रमुख 25–30 लाख लोगों की गतिविधियों की जानकारी जुटा रही थी। इसमें भारत के प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, सैन्य तथा प्रशासनिक अधिकारी नेता–मंत्री सहित विभिन्न क्षेत्रों के लगभग 10,000 शीर्ष व्यक्ति शामिल हैं। डिजिटल वार में इकट्ठा की गई सूचनाओं के विश्लेषण तथा आर्टिफीशियल इंटेलिजेंस के द्वारा 'इन्फोर्मेशन पल्युशन, परसेप्सन मेनेजमेंट एण्ड प्रोपेगंडा' अर्थात चयनित अथवा झूठी मनघड़ंत सूचनाओं के आधार पर अपप्रचार द्वारा लोगों की धारणाएं अपने पक्ष में करने तथा देश में भ्रांतियां फैला कर वहां की सरकारों, सरकारी नीति तथा व्यवस्थाओं के विरुद्ध माहौल बनाना शामिल है। चीन अपने विशाल डिजिटल संसाधनों से जासूसी द्वारा सूचना एकत्र करने में सबसे आगे है। यही नहीं पिछले दिनों दिल्ली से एक पत्रकार का चीन के लिये जासूसी करते हुये पकड़े जाने से पता लगता है कि मानव तथा डिजिटल दोनों जासूसियों में चीन संलग्न है।

21 सितम्बर को हुई बातचीत में दोनों ओर से सीमा पर सैनिकों की तैनाती न बढ़ाने तथा तनाव कम करने के लिये बातचीत आगे भी जारी रखने पर सहमति हुई है। भारत अपने रूख पर अडिग है कि चीन मई से पहले वाली स्थिति को बहाल करे, तभी आर्थिक, राजनीतिक तथा अन्य द्विपक्षीय संबंध सामान्य हो सकेंगे। सीमा पर एकतरफा बदलाव करने का प्रयास कर तनाव पैदा का दोषी चीन है, अतः शांति–सद्भावना बहाल करने तथा आपसी रिश्ते ठीक करने का बड़ा दायित्व भी उसी पर है। आशा करनी चाहिये कि विश्व परिदृश्य में बदनामी, दक्षिणी चीन सागर की तनातनी, भारतीय सेना के पराक्रम तथा मोदी जी के नेतृत्व में सरकार का दृढ़ संकल्प देखते हुए वह भारत के साथ तनाव घटाने के लिये आवश्यक कदम उठायेगा। फिर भी धोखेबाज चीन की बातों पर विश्वास नहीं किया जा सकता। इसलिये भारत सरकार तथा सेना को हर परिस्थिति का मुकाबला करने तथा उसमें विजय प्राप्त करने की तैयारी रखनी ही होगी। ■

जीवन में मनोबल ही श्रेष्ठ

राजा का एक हाथी था, जिसे राजा बहुत प्रेम किया करता था। वह बुद्धिमान एवं स्वामिभक्त था। उसने बड़ी यशोगाथा प्राप्त की थी। अनेक युद्धों में अपनी वीरता दिखाकर उसने राजा को विजयी बनाया था।

अब वह हाथी धीरे-धीरे बूढ़ा हो गया। उसका सारा शरीर शिथिल हो गया। वह एक दिन तालाब पर पानी पीने गया। तालाब में पानी कम होने से हाथी तालाब के मध्य में पहुँच गया। पानी के साथ तालाब के बीच में कीचड़ भी खूब था। हाथी उस कीचड़ के दलदल में फँस गया। वह बहुत घबराया और जोर-जोर से चिंघाड़ने लगा। उसकी चिंघाड़ सुनकर सारे महावत दौड़े आए।

उसकी दयनीय स्थिति को देखकर वे सोच में पड़े कि इतने विशालकाय हाथी को कैसे निकाला जाए? आखिर उन्होंने बड़े-बड़े भाले भौंके, जिसकी चुभन से वह अपनी शक्ति को इकट्ठी करके बाहर निकल जाये, परन्तु उन भालों ने उसके शरीर को और भी पीड़ा पहुँचाई, जिससे उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। जब यह समाचार राजमहल में राजा के कानों में पड़ा, वे भी जल्दी से वहाँ पहुँचे। कुछ सोचकर राजा ने कहा, ''बूढ़े महावत को बुलाया जाये।'' बूढ़े महावत ने आकर राजा को सलाह दी कि हाथी को बाहर निकालने का एक ही तरीका है कि बैंड लाओ, युद्ध का नगाड़ा बजाओ और सैनिकों की कतार इसके सामने खड़ी कर दो। कुछ ही घंटों में सारी तैयारियाँ हो गई।

जैसे ही नगाड़ा बजा और सैनिकों की लम्बी कतार देखी, हाथी को एकदम से स्फुरणा हुई और वह एक ही छलाँग में बाहर आ गया। नगाड़े की आवाज ने उसे भुला दिया कि मैं बूढ़ा हूँ, नगाड़े की आवाज ने उसके सुप्त मनोबल को जगा दिया। युद्ध के बाजे बज जाएँ और वह रुका रह जाये, ऐसा कभी नहीं हुआ था। जीवन में मनोबल ही श्रेष्ठ है। जिसका मनोबल जाग्रत हो गया,उसको दुनिया की कोई भी शक्ति रोक नहीं सकती। ■

? बाल प्रश्नोत्तरी

बाल मित्रों! यह प्रश्नोत्तरी पाथेय कण के 16 अगस्त के अंक पर आधारित है। उक्त अंक को आप पढ़ेंगे तो नीचे दिये गये सभी प्रश्नों के उत्तर बड़ी सरलता से दे सकेंगे।

1. अयोध्या में राम-जन्मभूमि पर मंदिर का भूमि पूजन कब हुआ?
(क) 5 अगस्त 2019 (ख) 5 अगस्त 2020 (ग) 10 नवम्बर 1989 (घ) 9 नवम्बर 2019

2. जम्मू-कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाले अनुच्छेद 370 तथा 35 ए कब से निष्प्रभावी हुए?
(क) 5 अगस्त 2019 (ख) 5 अगस्त 2020 (ग) 25 अक्तूबर 1974(घ) 9 नवम्बर 2019

3. श्री राम मंदिर भूमि पूजन में मुख्य यजमान बनने का सौभाग्य किसे मिला?
(क) चंपत राय (ख) महन्त नृत्य गोपाल दास (ग) सलिल सिंहल (घ) के. पराशरण

4. श्री राम मंदिर (यात्री सुविधाओं सहित) कुल कितने क्षेत्र में बनना प्रस्तावित है?
(क) 3 एकड़ (ख) 50 एकड़ (ग) 60 एकड़ (घ) 70 एकड़

5. प्रस्तावित हाईटेक नव्य अयोध्या कितने क्षेत्र में बसाने की योजना है?
(क) 300 हैक्टेयर (ख) 400 हैक्टेयर (ग) 500 हैक्टेयर (घ) 600 हैक्टेयर

6. जयपुर में संघ कार्यालय भारती भवन का निर्माण किनकी देखरेख में हुआ?
(क) भंवर सिंह जी (ख) जय बहादुर सिंह (ग) कृष्णचंद भार्गव (घ) ठाकुरदास टंडन

7. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में दक्षिण का सेनापति किस प्रचारक को कहा गया?
(क) राजा भाऊ पातुरकर (ख) मोरुभाऊ केतकर (ग) यादव राव जोशी (घ) यादव राव कालकर

8. कम ऊँचाई के तानों को हिम्मत में बदल आईएएस बनी आरती डोगरा कहाँ की रहने वाली है?
(क) जम्मू (ख) देहरादून (ग) शिमला (घ) जयपुर

9. झारखण्ड के किस जिले के ग्रामीणों ने लाकडाउन काल में अपने श्रमदान से सड़क बना ली?
(क) रांची (ख) गिरिडीह (ग) धनबाद (घ) बोकारो

10. भारतीय शास्त्रों में सांख्य दर्शन की रचना किस ऋषि-मुनि ने की?
(क) कणाद (ख) गौतम (ग) जैमिनी (घ) कपिल

(उत्तर इसी अंक में हैं)

पहचानो तो यह महापुरुष कौन है ?

बाल मित्रों! यहाँ एक महान महिला का चित्र तथा उनके जीवन के बारे में कुछ संकेत दिये जा रहे हैं। संकेत के आधार पर चित्र को पहचानो और अपने ज्ञान की परीक्षा करो।

- आपका मूल नाम 'मार्ग्रेट एलिजाबेथ नोबुल' था।
- आप एक लेखक, शिक्षक तथा स्वामी विवेकानन्द की शिष्या थी।
- आपने महिला शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

(उत्तर इसी अंक में हैं)

कोरोनाः बचाव ही सुरक्षा है

कोरोना महामारी का संक्रमण रूकने का नाम नहीं ले रहा है। इस महामारी की चपेट में आने वाले लोगों की संख्या राजस्थान में 1.25 लाख, भारत में 59 लाख तथा विश्व में 3 करोड़ को पार कर चुकी है। भारत में प्रतिदिन 90–95 हजार नये मरीजों की पहचान हो रही है। विश्व के कई देशों में इस बीमारी की रोकथाम के लिये टीका बनाने में संलग्न हैं, जिनका परीक्षण विभिन्न चरणों में है। लेकिन आज अभी यह टीका उपलब्ध नहीं है। इन परिस्थितियों में बचाव के लिये सरकार की ओर से जारी दिशा निर्देशों में 2 गज की शारीरिक दूरी तथा नाक–मुँह को ढ़कना (मास्क–गमछे द्वारा) पर निरन्तर जो दिया जा रहा है। 17 सितम्बर को अपने जन्म–दिन के अवसर पर प्रधानमंत्री मोदी ने इन दो सावधानियों की पालना करने का देशवासियों से आग्रह किया है। जब तक बीमारी का इलाज (दवा) उपलब्ध न हो, बीमारी से बचाव ही हमारी सुरक्षा है। उपरोक्त दो सावधानियों के अलावा शरीर प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाकर कोरोना संक्रमण से काफी हद तक बचा जा सकता है। प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिये निम्न उपाय सहायक होंगेः–

- 150 मिली (एक कप) आयुष क्वाथ लें।
- समशामनी वटी 500 एमजी दिन में 2 बार।
- गिलोय पाउडर (1–3 ग्राम) गर्म पानी के साथ 15 दिन।
- अश्वगंधा (500 एमजी दिन में दो बार) अथवा 1–3 ग्राम अश्वगंधा पाउडर गर्म पानी के साथ 15 दिन ।
- आंवला /आंवला पाउडर (1–3 ग्राम) रोजाना।
- सूखी खांसी हो तो मुलेठी पाउडर (1–3 ग्राम) गर्म पानी के साथ दिन में 2 बार।
- सुबह–शाम हल्दी (चुटकी भर) वाला गर्म दूध।
- गले में खराश हो तो एक गिलास पानी में आधा चम्मच हल्दी तथा थोड़ा नमक डाल कर गर्म करें और गुनगुने पानी से गरारे करें।
- रोज एक चम्मच च्वनप्राश का सेवन करें।

लक्षण– कोरोना वायरस से संक्रमित के लक्षण फ्लू से मिलते जुलते हैं। कोरोना संक्रमित व्यक्ति को बुखार, जुकाम, सांस लेने में तकलीफ, नाक बहना, गले में खराश, सूखी खांसी, सूंघने तथा स्वाद महसूस करने की क्षमता में कमी आना आदि प्रमुख लक्षण हैं। कुछ मरीजों में उल्टी–दस्त की शिकायत भी पाई गई है। यह वायरस एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में आसानी से फैलता है। कुछ मामलों यथा अधिक उम्र के लोग और जिन्हें पहले से अस्थमा, मधुमेह (डायबिटीज), हृदय की बीमारी वाले लोगों के लिये समय पर उचित इलाज न मिलने पर कोरोना संक्रमण प्राणघातक भी हो सकता है।

बचाव के उपाय – स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा जारी दिशा–निर्देशों के अनुसार बार–बार साबुन से 20 सैकिण्ड तक हाथ धोना अथवा अल्कोहल आधारित हैंड सेनिटाइजर का उपयोग करना, खांसते ओर छींकते समय नाक तथा मुंह रूमाल/टिश्यु पेपर से ढ़कना, सर्दी–जुकाम–खांसी अथवा फ्लू जैसे लक्षणों वाले व्यक्तियों से पर्याप्त शारीरिक दूरी रखना, मांसाहार के सेवन तथा जंगली जानवरों के सम्पर्क में आने से बचना। नित्य प्राणायम भी लाभदायक है।

किसी भी व्यक्ति में संक्रमण के लक्षण पाए जाएं तो तुरन्त चिकित्सकीय परामर्श लें, उनकी सलाह अनुसार दवा तथा पथ्य लेना चाहिये। भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय ने कोरोना संबंधी जानकारी तथा सहायता के लिये 24 घंटे चलने वाले नियंत्रण कक्ष स्थापित किये हैं। इनसे सम्पर्क करने के लिये फोन नं. 011–23978046 तथा ईमेल ncov019@gmail.com का उपयोग किया जा सकता है। राजस्थान सरकार द्वारा भी सहायता के लिये फोन नं. 0141–2225624/2225000 तथा टोल फ्री नं. 104/108 पर सम्पर्क किया जा सकता है।

'मुगल म्युजियम' का नाम हुआ ''छत्रपति शिवाजी महाराज म्युजियम''

उत्तर प्रदेश में आगरा के निर्माणाधीन 'मुगल म्युजियम' का नाम बदलकर अब इसका नाम ''छत्रपति शिवाजी महाराज म्युजियम'' रखने की घोषणा मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने की है। उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेख यादव ने जनवरी 2016 में इस म्युजियम का शिलान्यास किया था। यह म्युजियम ताजमहल के पूर्वी गेट से 1.5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। छः एकड़ में बन रहे इस म्युजियम परियोजना पर 170 करोड़ रुपए खर्च होने का अनुमान है।

म्युजियम का नाम बदलने की घोषणा करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा, ''उत्तर प्रदेश सरकार राष्ट्रवादी विचारों को पोषित करती है। गुलामी की मानसिकता के चिन्हों को छोड़कर राष्ट्र के प्रति गौरवबोध कराने वाले मुद्दों को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। छत्रपति शिवाजी महाराज हमारे नायक हैं, मुगल किसी भी स्थिति में हमारे नायक नहीं हो सकते हैं। यह नया उत्तर प्रदेश है। नए उत्तर प्रदेश में गुलामी की मानसिकता के प्रतीकों के लिए कोई जगह नहीं है।'' पर्यटन विभाग आगरा के निदेशक ने शिवाजी और आगरा के बीच संबंध पर प्रकाश डालते हुए कहा कि औरंगजेब के जमाने में आगरा फोर्ट पर उन्हें (शिवाजी महाराज को) कैद करके रखा गया था, लेकिन वे बहादुरी के साथ वहां से निकलने में कामयाब रहे थे।

जन्म शताब्दी वर्ष (१९२०-२०२०) पर विशेष

संघ का गटनायक

श्री दत्तोपंत जी ठेंगड़ी जन्म शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत दिये जा रहे प्रसंगों की श्रृंखला में इस बार प्रस्तुत है प्रमिलाताई मेढ़े, सह संचालिका, राष्ट्र सेविका समिति, नागपुर का अनुभव कथन –

उनका एक प्रिय वाक्य था– ''मैं संघ का गटनायक हूँ। जहाँ भी जाऊँगा या मुझे भेजा जायेगा उसी भूमिका से कार्य करूँगा यह भान भी रखूँगा।'' संगठन को कैसी प्राथमिकता देना चाहिये, यह मुख्य बिन्दु रहता था। संगठन के कारण व्यक्ति बड़ा बनता है, परन्तु कभी-कभी मैं संगठन से बड़ा हूँ– मेरे कारण संगठन बड़ा बना है, यह अहंकार व्यक्ति में निर्माण हो सकता है– उससे बचना है।

संघ का गटनायक एक महत्वपूर्ण कड़ी है। एक छोटे गट का वह प्रमुख है, अपने गट को संघ से जोड़े रखता है, विविध पद्धति से संघ में ढ़ालता है। उसी प्रकार संघ का स्वयंसेवक जब दूसरे क्षेत्र में भेजा जाता है, तब वहाँ विविध उपायों से संघानुकूल वातावरण निर्माण करना यह उसका दायित्व है। अपने आचार विचार से संघ प्रकट करना, संघ के बारे में आस्था निर्माण करना उसका कर्तव्य है। 'मैं संघ का गटनायक' इसका भान सतत रखने से वह कभी भी विचलित नहीं होगा। स्वयंसेवकत्व यह गर्व का विषय है ऐसा वे मानते थे।

संगठन यानि ऋषि संस्था– निर्भीक, निर्मोही; संगठन यानि 'धर्मदण्डयोऽसि' की भूमिका, व्यवस्था। संगठन और राजनीति अलग हैं पर आधार 'धर्म' ही है। संगठन को यह पथ्य अधिक रखना है। बातें हितकारी हों। संबंध मातृवत् सहज स्नेह के हों। लाड़ना कब, ताड़ना कब इसका विवेक संगठन करेगा। संगठन का श्रेष्ठ स्थान बनाये रखना यह बड़ी कठोर तपस्या, साधना है परन्तु वह करते ही रहना है। सफलता भी प्राप्त करना है।

मा. दत्तोपंत, पं. द्वारकाप्रसाद मिश्र (पुराने मध्यप्रान्त के तत्कालीन गृहमंत्री) का एक वाक्य हमेशा उद्धृत करते थे– कार्यकर्ता का सुविधाभोगी होना एवं अधिकारी का प्रतिष्ठा के प्रति सजग होना किसी भी संगठन को पतन, विनाश की दिशा में ले जा सकता है। दूसरी बात यह कि किसी अयोग्य-अक्षम कार्यकर्ता को उच्च पद देना भी स्खलन की दिशा में ले जा सकता है। इन बातों में सतर्क रहना है। अपना हिन्दू संगठन देव (राष्ट्र) कार्य के लिये ही निर्माण हुआ है। यह स्मरण सतत करेंगे-रखेंगे तो कोई भी हमें अपने रास्ते से विचलित नहीं कर सकेगा।

श्री ठेंगड़ी जी के पास वह कौन सा चुम्बक है, जिसमें सभी खिंचे चले आते हैं– निश्चय ही वह उनका निश्छल, निःस्वार्थ, आत्मीय तथा परिवार तुल्य व्यवहार ही तो है। ■

दैनिक जीवन में श्रीमद्भगवद्गीता का प्रयोग

श्रीमद् भगवद्गीता जीवन की समस्यों को पार निकालने और प्रमादग्रस्त जनों को जगाने का महामंत्र है। इस बार **जीवन में समता** लाने के लिए गीता के कुछ अनुभूत प्रयोग दिये जा रहे हैंः-

विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः।।
इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः।
निर्दोषं हि समं ब्रह्म तस्माद्ब्रह्मणि ते स्थिताः।।

(गीता 5-18,19)

यथार्थ ज्ञानी विद्या और विनययुक्त ब्राह्मण में तथा गौ, हाथी, कुत्ते और चाण्डाल में समदर्शी (समान भाव से देखने वाला) होता है। विद्वान योगी की दृष्टि में ये शारीरिक भेद निरर्थक हैं क्योंकि सभी प्राणियों में ईश्वर अंश का वास है। जिनका मन समता (समभाव) में स्थित होता है वे जीवित अवस्था में ही सम्पूर्ण संसार को जीत चुके होते हैं अर्थात उन्होंने अपने जीवनकाल में ही जन्म-मृत्यु के बंधनों पर विजय प्राप्त कर ली है। ब्रह्म के समान निर्दोष होने के कारण वे सदा ब्रह्म में ही स्थित हैं।

आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन।
सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः।।

(गीता 6-32)

हे अर्जुन! मेरे सुविचारित मत में वह योगी परम श्रेष्ठ है, जो अपनी आत्मा की उपमा से सुख-दुःख की प्राप्ति में सब जीवों को समभाव से देखता है। जैसे मनुष्य अपने मस्तक, हाथ, पैर और गुदादि सभी अंगों से समान रूप से अपनापन रखता है उन अंगों में भेद नहीं करता है, इसी तरह योगी सुख और दुःख (दो विपरीत स्थितियों) तथा सभी जीव राशियों को समान भाव से देखता है।

समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः।
ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम्।।

(गीता 9-29)

मैं किसी से द्वेष नहीं करता और न किसी का पक्षपात करता हूँ; जीवमात्र में मेरा समभाव है। परन्तु जो प्राणी भक्तिभाव से मेरी सेवा करते हैं, वे मेरे प्रिय मुझमें ही स्थित हैं और मैं भी उनका प्रेमी हूँ, उनमें हूँ।

बीटीपी की जनजाति-समाज विरोधी गतिविधियों से संत-समाज में रोष

राजस्थान के दक्षिणी हिस्से में बसे जनजाति समाज में भारतीय ट्राइबल पार्टी (बीटीपी) लम्बे समय से जनजाति संस्कृति व परम्पराओं के विरुद्ध दुष्प्रचार कर धार्मिक विद्वेष तथा जातिगत वैमनस्य पैदा करने का काम कर रही है। बीटीपी की ऐसी गतिविधियों से रुष्ट जनजाति संत समाज ने 17 सितम्बर को उसके विरुद्ध कानूनी कार्रवाई के लिए उदयपुर जिलाधीश को राज्यपाल के नाम ज्ञापन सौंपा।

ज्ञापन में आरोप लगाया गया है कि 12 अगस्त 2020 को नन्दिन माता मन्दिर बड़ोदिया तथा 26 अगस्त 2020 को हनुमान मन्दिर करजी (बागीदौरा) जिला बांसवाड़ा में बीटीपी के सौ से अधिक समर्थकों द्वारा जय जोहार, लाल सलाम के नारे लगाते हुए मन्दिर की धर्म पताका हटाकर पुजारी एवं भक्तों को डराया-धमकाया गया। इन लोगों ने वहां अराजकता फैलाने वाले नारे लगाए। 27 अगस्त 2020 को कसारवाड़ी सज्जनगढ़ बांसवाड़ा में बीटीपी समर्थकों द्वारा गणपति की मूर्ति को तोड़ कर उत्पात मचाया गया, जिसमें दर्ज मामले में तीन बीटीपी कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी भी हुई है। 30 अगस्त 2020 को सोनार माता मन्दिर, सलूम्बर में भी इसी प्रकार के धर्म विरोधी तत्वों, बीटीपी के कार्यकर्ताओं एवं समर्थकों द्वारा एकत्र होकर धर्म ध्वजा को हटाकर उसके स्थान पर बीटीपी का झंडा लगाया गया तथा पुजारी एवं भक्तों के साथ मारपीट कर हिंसा फैलाई गई। ज्ञापन देने वालों में जनजाति समाज के संत, मेट, कोतवाल व धर्म प्रेमी जन शामिल थे। सभी ने सख्त कानूनी कार्रवाई की मांग की है।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि क्रिश्चियन मिशनरीज और वामपंथी दल देशभर में आदिवासियों को उकसा रहे हैं कि वे जनगणना 2021 में खुद को गैर हिंदू दर्ज कराएं। धर्म की जगह गोंड, कबीर-पंथी या अन्य विकल्प भरें। आदिवासियों में भ्रम फैलाने के लिए रामायण के तथ्यों को भी तोड़-मरोड़ कर गलत तरीके से पेश किया जा रहा है, जैसे कहा जा रहा है कि तुम वानर राजा बाली के वंशज हो, जिसे भगवान राम ने छल से मारा था। बाली आदिवासी थे, हिंदू नहीं। इसलिए आदिवासी खुद को हिंदू न लिखें।

स्वदेशी जागरण मंच ने किया अर्थ एवं रोजगार सृजकों का सम्मान

स्वदेशी जागरण मंच, जोधपुर महानगर ने रविवार दिनांक 13 सितम्बर को वेबिनार के माध्यम से अर्थ एवं रोजगार सृजक सम्मान समारोह कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अतुल भंसाली ने आईडीयल कोटिंग इंडस्ट्रीज, चित्रलेखा महिला खाखरा गृह उद्योग, अरिहंत पोलीप्लास्ट/अरिहंत पोलिमर, हेंडीक्राफ्ट व्यवसायी श्री देवी सिंह एवं श्री दीपेन्द्र सिंह को ''दत्तोपंत ठेंगड़ी जिला स्वावलंबन सम्मान'' से अलंकृत किया। अपने अध्यक्षीय संबोधन में श्री भंसाली ने कहा कि देश में उच्च आर्थिक राष्ट्रनिष्ठा को बढ़ाना होगा तथा देश के आर्थिक सशक्तिकरण के लिये मजबूती के साथ लोकल के लिये वोकल होना होगा।

वेबिनार के मुख्य वक्ता के रूप में स्वदेशी जागरण मंच के प्रांत संयोजक श्री अनिल जी ने कहा कि सामाजिक सरोकार हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है, पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने एकात्म मानववाद में इसकी व्याख्या की है। यही कारण है कि कोरोना जैसी महामारी में जब लोगों का रोजगार छिन्न भिन्न हो गया है, हमारे बीच कुछ ऐसे भी लोग हैं जिन्होंने सामाजिक सरोकार निभाने के लिये रोजगार सृजन कर लोगों को आर्थिक रूप से सशक्त करने की राह चुनी। ऐसे अर्थ एवं रोजगार सृजक लोग ही हमारी धरोहर हैं और स्वदेशी जागरण मंच ऐसे ही योद्धाओं को आज सम्मानित कर रहा है।

स्वदेशी जागरण मंच के क्षेत्रीय संयोजक श्री धर्मेन्द्र दुबे ने कहा कि आने वाले समय में अर्थ एवं रोजगार सृजक लोग ही देश की अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने तथा देश को आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले हैं। कार्यक्रम में 40 प्रतिभागी रहे।

संघ के सेवा विभाग द्वारा

रक्तदान शिविरों का आयोजन

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ परिवार के सेवा विभाग ने सामाजिक दायित्व का निर्वहन करते हुए जीवनदायक रक्त समाजजन को सहज व सरल उपलब्ध कराने की आकांक्षा से पूरे प्रदेश में रक्तदान शिविरों का आयोजन कर सैंकड़ों यूनिट रक्त एकत्र किया गया। सेवा प्रमुखों की उपस्थिति में हुए इन आयोजनों में स्वयंसेवकों ने सेवा-समर्पण और निष्ठा की भावना के साथ शिविरों में पहुँचकर स्वैच्छिक रक्दान शिविरों को सफल बनाया।

सेवा भारती की प्रेरणा से जयपुर की कोली समाज ब्रह्मपुरी गेटोर सेवा बस्ती के रक्तदान शिविर में 43 यूनिट तथा श्रीगोपालनगर शिविर में 35 यूनिट रक्त एकत्र किया गया। विजयनगर तथा उदयपुर में भी रक्तदान शिविर आयोजित होने की जानकारी मिली है, जहाँ क्रमशः 51 तथा 78 यूनिट रक्त एकत्रित हुआ। सभी शिविरों के आसपास के समाज बंधुओं ने उत्साहपूर्वक रक्तदान किया।

जयपुर तथा उदयपुर शिविरों में उपस्थित राजस्थान क्षेत्र के सेवा प्रमुख श्री शिवलहरी ने कहा, ''जो समाज को जोड़ते हैं, वही रक्तदान करते हैं, समाज को तोड़ने वाले केवल भ्रम फैलाकर रक्त बहाते हैं।''

साहित्य परिषद क्षेत्रीय कार्यसमिति बैठक

लोकदेवता, लोकभाषा व बोली पर संगोष्ठियां

राजस्थान के लोक देवता, लोक भाषा व बोली का अध्ययन करने तथा इनके बारे में साहित्य-सृजन करने के लिए अखिल भारतीय साहित्य परिषद ने राजस्थान में अनेक स्थानों पर विशेषकर जयपुर तथा जोधपुर प्रांतों में संगोष्ठियाँ आयोजित की।

गत दिनों हुई साहित्य परिषद राजस्थान की क्षेत्रीय कार्यसमिति की बैठक में जयपुर प्रांत के अध्यक्ष ओम प्रकाश भार्गव तथा जोधपुर प्रांत के अध्यक्ष डा.नरेन्द्र मिश्र ने इस संबंध में विस्तार से अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की।

चित्तौड़ प्रांत के अध्यक्ष विष्णु शर्मा ने बताया कि उनके प्रांत में पुराणों का अध्ययन कर उससे संबंधित कविता, कहानी, लेख तैयार करने का कार्य चल रहा है। पुराणों में दिये गये गूढ़ रहस्य जन साधारण तक उद्‌घाटित करने का प्रयास जारी है।

क्षेत्रीय अध्यक्ष डॉ.अन्नाराम के अनुसार इन संगोष्ठियों में प्राप्त आलेखों का प्रकाशन केन्द्रीय स्तर पर किया जाना है। साहित्य परिषद न्यास द्वारा प्रकाशित पुस्तकों का ई-संस्करण जारी करने का सुझाव भी बैठक में दिया गया।

प्रांत महामंत्री श्री कर्णसिंह बेनीवाल के अनुसार कोरोना वायरस को देखते हुए प्रांतीय स्तर के बजाय विभागीय स्तर पर कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग लगाने का प्रस्ताव बैठक में आया।

महंत चांदनाथ औषधालय का हुआ लोकार्पण

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कार्यालय केशव कृपा अलवर पर डॉ.हेडगेवार स्मृति सेवा प्रन्यास द्वारा संचालित महंत चांदनाथ औषधालय का लोकार्पण हुआ।

कार्यक्रम में आरएसएस के अ.भा.बौद्धिक शिक्षण प्रमुख श्री स्वांतरंजन ने कहा कि वास्तव में नर सेवा ही नारायण सेवा है तथा इस चिकित्सालय को और व्यापक बनाकर वंचित वर्ग को चिकित्सा सुविधा प्रदान कर लाभान्वित करेंगे।

विशिष्ट अतिथि के रूप में क्षेत्र प्रचारक श्री निंबाराम ने प्रन्यास को और अधिक सेवा कार्यों को करने की प्रेरणा प्रदान की।

कार्यक्रम में अध्यक्षीय उद्‌बोधन में अलवर सांसद महंत बालकनाथ योगी ने देशभर में विभिन्न स्थानों पर बाबा मस्तनाथ मठ के माध्यम से चलाए जाने वाले सेवा कार्यों की जानकारी दी तथा इस औषधालय में भी पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया।

श्रद्धांजलि

तमिलनाडु के वरिष्ठ प्रचारक वीरबाहु जी नहीं रहे

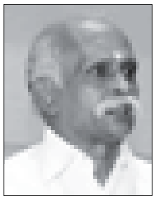

संघ के वरिष्ठ प्रचारक तथा चैन्नई से प्रकाशित राष्ट्रीय विचारों की साप्ताहिक पत्रिका ''विजय भारतम्'' के सम्पादक वीरबाहु जी का कोरोना बीमारी से गत 12 सितम्बर को चैन्नई में निधन हो गया है।

तिरुनेलवेली (तमिलनाडु) में 14 जनवरी, 1949, को जन्मे वीरबाहु जी 15 वर्ष की आयु में संघ के स्वयंसेवक बने तथा थोड़े समय बाद ही जीवनव्रती प्रचारक बन गये। वहाँ की विपरीत परिस्थितियों में संघ-कार्य को विस्तार तथा मजबूती प्रदान की। उन्होंने विभिन्न दायित्व निभाते हुये विश्व हिन्दू परिषद तथा हिन्दू मुन्नानी संगठनों के प्रांत प्रमुख के दायित्वों का भी निर्वहन किया। वे जागरण पत्रक ''हिन्दू संघ सिद्धि'' तथा राष्ट्रीय विचारों की साप्ताहिक पत्रिका ''विजय भारतम्'' के सम्पादक थे।

पाथेय कण परिवार वीरबाहु जी को श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

पौधारोपण कार्यक्रम

सेवा भारती समिति चितौड़गढ़ द्वारा मोहर मगरी गांधीनगर बस्ती में पौधारोपण किया गया। समिति के महिला मण्डल ने बताया कि इस पौधारोपण में जामुन, आम, अंजीर आदि फलदार पौधे लगाए हैं। बस्तीवासियों ने इन पौधों की देखभाल का संकल्प लिया है। इस कार्यक्रम में सेवा भारती, महिलामंडल कार्यकर्ताओं के साथ ही बस्ती के निवासियों ने अपनी भागीदारी द्वारा पर्यावरण प्रेमी होने का परिचय दिया।

आपणी दुकान अवलोकन

हिन्दू जागरण मंच, जोधपुर महानगर द्वारा आर्थिक स्वावलंबन योजना के तहत ''आपणी दुकान का अवलोकन'' कार्यक्रम में गत 21 सितंबर को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय बौद्धिक शिक्षण प्रमुख श्री स्वान्त रंजन, राजस्थान के क्षेत्र प्रचारक श्री निम्बाराम सहित जोधपुर प्रांत के संघ तथा हिन्दू जागरण मंच के अधिकारी एवं स्वयंसेवकों ने आपणी दुकान योजना के लिए दिए जाने वाले ठेलों का निरीक्षण किया। मंच के जोधपुर महामंत्री श्री पदमसिंह कच्छावा ने योजना की जानकारी देते हुए बताया कि बड़ी संख्या में बेरोजगार हिन्दू युवाओं को आपणी दुकान के माध्यम से स्वरोजगार मिल रहा है। इस आर्थिक स्वावलंबन से वे अपने परिवार तथा समाज की सेवा में भी रूचि दिखा रहे हैं।

उत्तर : बाल प्रश्नोत्तरी - 1.(ख)2.(क)3.(ग)4.(घ)5.(ख)6.(क)7.(ग)8.(ख)9.(ग)10.(घ) उत्तर महापुरुष पहचानो- भगिनी निवेदिता

श्रीनगर में 3 आतंकी ढ़ेर

श्री नगर के बटमालू इलाके में आतंकवादियों के छिपे होने की सूचना पर गत 17 सितम्बर को सुरक्षाबलों ने क्षेत्र में सर्च आपरेशन चलाया जिसमें तीन आतंकी ढ़ेर किए गये। पुलिस सूत्रों के अनुसार श्रीनगर इलाके में सुरक्षाबलों ने 16 आतंकवादियों को मार गिराया है। वहीं पूरे प्रदेश में इस साल 177 आतंकवादियों का सफाया हुआ है।

17 सितम्बर को ही सेना ने अपनी सतर्कता से पुलवामा जैसा आतंकी हमला करने की साजिश को असफल कर दिया। सेना तलाशी अभियान में पुलवामा जिले के करेवा में हाईवे के पास जमीन में एक सिंटेक्स टैंक (प्रायः घरों के ऊपर रखी जाने वाली प्लास्टिक की बड़ी टंकी) मिला। उस टेंक में 52 किलो उच्च श्रेणी का विस्फोटक तथा 50 डेटोनेटर बरामद हुए। सूत्रों के अनुसार इस विस्फोटक से सुरक्षा बलों के काफिले में बड़ी तबाही मचाई जा सकती थी। जमीन के नीचे ऐसे बंकरों का घरों के पिछवाड़े (जिसका रास्ता घर के तहखाने से होकर जाता है) तथा फलों के घने बागानों में मिलने से सुरक्षा बल थोड़े चिंतित अवश्य हैं। क्योंकि आतंकी गतिविधि के बाद आतंकी इन बंकरों में कई दिन तक छिप सकते हैं, जबकि सुरक्षाबल घरों-गलियों में इन्हें तलाश रहे होगे।

पाकिस्तान भी निरंतर सीमा पर गोलाबारी करके, सुरंग बनाकर आतंकवादियों की घुसपैठ कराने, ड्रोन द्वारा हथियार मुहैया कराने की कुत्सित चालें चल जम्मू-कश्मीर में अशांति फैलाने की साजिशें रच रहा है। गत दिनों सुरक्षाबलों ने लश्कर-ए-तैयबा के 3 आतंकियों को गिरफ्तार किया जो ड्रोन द्वारा गिराए हथियार लेने गए थे। उनके पास से एके-56 राइफलें, 2 पिस्टल, 4 ग्रेनेड सहित कई हथियार और गोलाबारूद बरामद हुए।

पत्रकार राजीव शर्मा चीन के लिए जासूसी करते पकड़ा गया

चीन के लिए जासूसी करने के आरोप में दिल्ली के पत्रकार राजीव शर्मा को इंटेलिजेंस ब्यूरो ने गिरफ्तार कर लिया है। उससे मिली जानकारी के आधार पर एक चीनी महिला जासूस किंग शी तथा नेपाली नागरिक शेर बहादुर उर्फ राज बोहरा को भी गिरफ्तार कर लिया गया है।

पूछताछ में राजीव ने न केवल रक्षा मंत्रालय से जुड़ी सूचनाएं लीक करना बल्कि गलवान घाटी डोकलाम सहित चीन की सीमा से जुड़े तमाम गोपनीय दस्तावेजों की जानकारी भी लीक करना स्वीकार किया। चीनी जासूस महिला के पास से दस मोबाइल, लेपटॉप, चीन की बैंकों से जुड़े 10-12 एटीएम कार्ड बरामद किए गए।

जानकारी में आया है कि प्रत्येक सूचना के लिए राजीव को लगभग 37000 रुपए मिलते थे। राजीव शर्मा चीन के एक जासूस से सोशल मीडिया पर संपर्क होने के बाद से उसे सूचनाएं भिजवा रहा था। 2019 में वह चीन भी गया था, वहां चीनी जासूस से मिलने के बाद उसे सूचनाएं लीक करने लगा। उस चीनी जासूस से राजीव को 30 लाख रुपए मिले तथा किंग शी और शेर बहादुर ने 40-45 लाख रुपए दिए, जो हवाला के जरिए मंगाए गए थे। किंग शी व शेर बहादुर ने दवा कम्पनी और एक ट्रेवल एजेंसी के रूप में शेल (मुखौटा) कम्पनियां बना रखी थीं।

नेपाल में 2 किलोमीटर भीतर घुसा चीन- दोस्त बनकर पीठ में छुरा घोंपा

भारत के प्रति नेपाल को उकसाकर सीमा विवाद को तूल देने वाले चीन ने अब उसके ही पीठ में छुरा घोंप दिया है। नेपाल के हुमला जिले में चीन ने दो किमी भीतर घुसकर स्थाई निर्माण कर लिया है। इतना ही नहीं चीनी सैनिकों ने नेपाल का सीमा-पिलर नं.11 भी उखाड़ फेंका है। प्राप्त जानकारी के अनुसार हुमला जिले में उसने नाम्खा गांवपालिका के लाप्चा गांव में एक साथ नौ सैन्य भवनों का निर्माण कर लिया है। चीन द्वारा नेपाली क्षेत्र पर कब्जा करने के विरूद्ध काठमांडु में जन प्रदर्शन हुए जिसमें ''चाइना गो बैक'' के नारे लगे।

नेपाल का हुमला जिला चीन की सीमा से लगा अति दुर्गम क्षेत्र है। जिले की उत्तरी सीमा के पास तिब्बती लोग बसे हैं इस कारण चीन इस पर कब्जा करने की चालें चल रहा है। विस्तारवादी तथा कम्युनिस्ट तानाशाही वाले चीन को तो हर तरफ अपनी सीमाओं के विस्तार में ही रुचि है, दोस्ती, समझौते या विश्व बिरादरी से उसे कोई लेना-देना नहीं है।

विदेशी धन का दुरुपयोग रोकने के लिए एफसीआरए में संशोधन

लोकसभा ने गत 21 सितम्बर को विदेशी अंशदान विनियमन अधिनियम (एफसीआरए) में संशोधन के विधेयक को पारित कर दिया। इसमें गैर सरकारी संगठन (एनजीओ) के पंजीकरण के लिए उसके पदाधिकारियों का आधार उपलब्ध कराना अनिवार्य बनाया गया है तथा संगठन के प्रशासनिक व्यय की अधिकतम सीमा को 50% से घटाकर 20% किया गया है।

वर्तमान में देश में लाखों एनजीओ बने हुए हैं जिन्हें विदेशों से अंशदान-सहायता मिलती है। ऊपरी स्तर पर (कागजों में) ये समाज में शिक्षा, स्वास्थ्य आदि के घोषित उद्देश्य के साथ गठित होते हैं, लेकिन इस विदेशी सहायता का बड़े पैमाने पर दुरुपयोग पाया गया है। शिक्षा-स्वास्थ्य के नाम पर धर्म परिवर्तन, विशेषकर गरीब बस्तियों तथा आदिवासी क्षेत्रों में संलग्न होने की शिकायतें बहुतायत में हैं। यही नहीं कुछ संगठनों द्वारा इस धन को समाज में द्वेष फैलाने, राष्ट्र-विरोधी गतिविधियों यहां तक कि आतंकी गतिविधियों तक में उपयोग किये जाने के प्रमाण उपलब्ध हैं।

वाम–लिबरल गैंग के दबाव में पुस्तक प्रकाशन से इन्कार

वाम–लिबरल बुद्धिजीवियों का गठजोड़ अपनी विचारधारा के प्रतिकूल की प्रत्येक घटना के विरोध को ''अभिव्यक्ति की आजादी'' का नाम देकर विरोध प्रदर्शन, जन–हित याचिका (पीआईएल) दायर करके तथा सोशल मीडिया पर अपनी भड़ास निकालती है। ये लोग दूसरे पक्ष को सुनने की हिम्मत नहीं रखते तथा ऐसे अवसरों पर उसे दबाने का हर संभव प्रयास करते हैं।

अधिवक्ता मोनिका अरोड़ा, सोनाली चितलकर तथा प्रेरणा मल्होत्रा द्वारा फरवरी 2020 के दिल्ली दंगों पर लिखी पुस्तक ''Delhi Riots 2020 : The Untold Story'' (दिल्ली दंगे 2020 : अनकही कहानी) को ब्लूम्सबरी इंडिया ने इस गेंग के दबाव में प्रकाशित करने से इन्कार कर दिया है, हालांकि पूर्व में पुस्तक के प्रकाशन को लेकर बातचीत पूरी हो चुकी थी।

इसी पब्लिशिंग हाउस (ब्लूम्सबरी इंडिया) ने सीएए के विरोध को बढ़ावा देते हुये जीया अस सलाम तथा उजमा औसफ द्वारा लिखित पुस्तक ''शाहीन बागः फ्राम ए प्रोटेस्ट टू ए मूवमेंट'' प्रकाशित की थी, जिसके लेखक ने दिल्ली दंगों के मुख्य आरोपी ताहिर हुसैन को निर्दोष बताया था। इस पुस्तक में पिछले साल नागरिकता संशोधन अधिनियम के खिलाफ किये गये विरोध प्रदर्शन तथा शाहीन बाग के पूरे घटनाक्रम का उल्लेख है।

घटनाक्रम के एक पक्ष को प्रकाशित करना तथा दूसरे पक्ष को अनुबंध करके भी प्रकाशन से इन्कार करना न केवल उसका दोगला रवैया है बल्कि 'अभिव्यक्ति की आजादी' गेंग की असहिष्णुता को भी दर्शाता है।

भारत में भी जिहादी आई.एस.की पैठ

सुन्नी आतंकवादी संगठन इस्लामिक स्टेट (आईएस) की भारत के 12 राज्यों में सक्रियता सामने आयी है। यह जिहादी ग्रुप स्वयं को इस्लाम का प्रचारक बताता है, जिसका उद्देश्य 'खिलाफत' स्थापित करना है। खिलाफत यानि एक मुस्लिम शासन जो कुरान और शरिया कानून के आधार पर चले। अपने दुश्मन को डराने के लिये आई. एस. लोगों का सिर सरेआम काटने और उसका विडियो प्रसारित करने में गौरवान्वित महसूस करता है। सीरिया एवं इराक के अधिकांश इलाकों पर आई.एस. का कब्जा हो गया है।

भारत में भी यह जिहादी संगठन अपन पैर पसारने में लगा है। एक जानकारी के अनुसार केरल, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, बिहार आदि राज्यों में आई.एस. ज्यादा सक्रिय है।

चिन्ता की बात है कि इसके संबंध भारत विरोधी संगठन लश्कर–ए–तैयबा और अल–कायदा जैसे आतंकी संगठनों से हैं। यह अपनी विचारधारा फैलाने के लिये सोशल मीडिया का सहारा भी ले रहा है।

विश्व की सबसे लम्बी ''अटल सुरंग'' बनकर तैयार

चीन से तनाव के बीच मनाली को लेह से जोड़ने वाली विश्व की सबसे लम्बी ''अटल सुरंग'' बनकर तैयार हो गई है, जिसका उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा आगामी 3 अक्तूबर को किये जाने की संभावना है। 9 किमी लम्बी अटल सुरंग 3000 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। इसके बन जाने से मनाली–लेह की दूरी 46 किमी तथा यात्रा समय 4 घंटे कम हो गया है।

विशेषताएं–इस सुरंग में हर 60 मीटर की दूरी पर सीसीटीवी केमरे लगे हैं। साथ ही सुरंग के अन्दर हर 500 मीटर की दूरी पर आपातकालीन निकास (इमर्जेंसी ऐग्जिट) भी बनाये गये हैं। सुरंग के अन्दर फायर हाइड्रेंट भी लगाये गये हैं, जिससे किसी प्रकार की अनहोनी में इनका इस्तेमाल किया जा सके। सुरंग की चौड़ाई 10.5 मीटर है। इसमें दोनों ओर 1–1 मीटर के फुटपाथ भी बनाये गये हैं। इस सुरंग से रोजाना 5000 वाहन 80 किमी प्रति घंटा की गति से गुजर सकते हैं।

इस सुरंग के बन जाने से लाहौल और स्पीति घाटी के सुदूर क्षेत्रों में सम्पर्क आसान होगा, जो अब देश से बारहों महीने जुड़े रहेंगे। यह सुरंग सामरिक तथा रणनीतिक दृष्टि से भी अति महत्वपूर्ण है। अब वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) तक रसद, सैन्य साजो सामान कम समय में आसानी से पहुँच सकेगा।

चीन ने 1000 साल पुराना बौद्ध मंदिर किया ध्वस्त

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीसी) की धार्मिक अल्पसंख्यकों और उनके पूजा स्थलों को लेकर घृणा जारी है। भारत के साथ जारी गतिरोध और कब्जे वाले तिब्बत में तिब्बतियों के पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) के प्रति दृष्टिकोण विशेष रूप से सीमावर्ती क्षेत्रों ने चीन को नाराज कर दिया है।

धार्मिक उत्पीड़न की एक ताजा घटना में, चीन ने शांक्सी प्रांत में 1000 वर्ष पुराने फुयुन मंदिर को ध्वस्त कर दिया है। फुयुन मंदिर वुजिन पर्वत पर स्थित था। बौद्ध धर्म के अनुयायियों के साथ– साथ तिब्बती आबादी के बीच फुयुन मंदिर की बढ़ती लोकप्रियता चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की सरकार को हजम नहीं हो रही थी।

फुयुन मंदिर को गत जुलाई माह में बिना किसी चेतावनी या कारण के ध्वस्त कर दिया गया। सीपीसी की ओर से इस मंदिर को ध्वस्त करना तालिबान आतंकवादियों के उस कृत्य की याद दिलाता है, जब अफगानिस्तान के बामियान में भगवान बुद्ध की बड़ी और एतिहासिक महत्व की प्रतिमा को उन्होंने नष्ट कर दिया गया था।

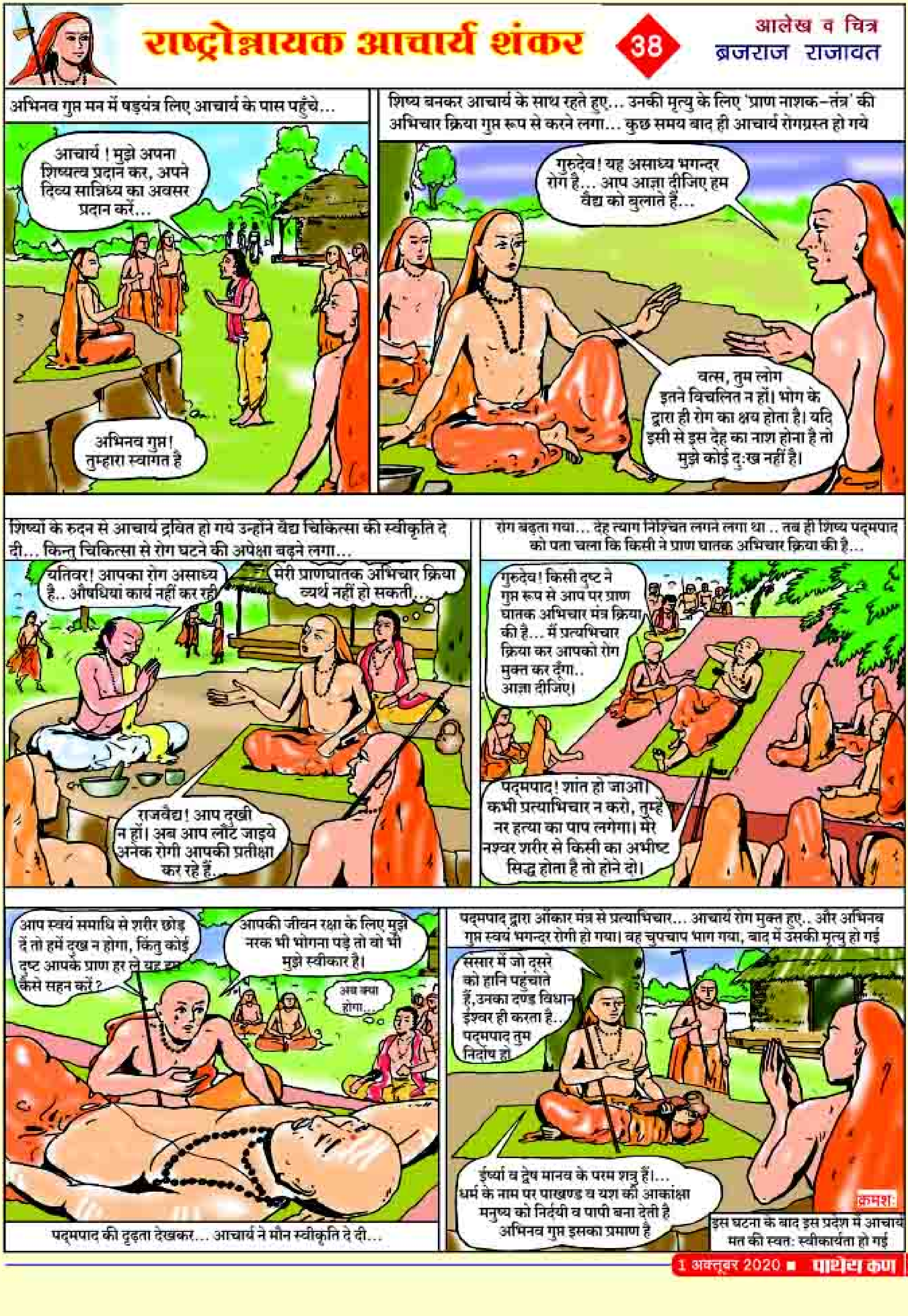
राष्ट्रोन्नायक आचार्य शंकर
38
आलेख व चित्र
ब्रजराज राजावत
अभिनव गुप्त मन में षड्‌यंत्र लिए आचार्य के पास पहुँचे...
आचार्य ! मुझे अपना शिष्यत्व प्रदान कर, अपने दिव्य सान्निध्य का अवसर प्रदान करें...
अभिनव गुप्त! तुम्हारा स्वागत है
शिष्य बनकर आचार्य के साथ रहते हुए... उनकी मृत्यु के लिए 'प्राण नाशक-तंत्र' की अभिचार क्रिया गुप्त रूप से करने लगा... कुछ समय बाद ही आचार्य रोगग्रस्त हो गये
गुरुदेव! यह असाध्य भगन्दर रोग है... आप आज्ञा दीजिए हम वैद्य को बुलाते हैं...
वत्स, तुम लोग इतने विचलित न हों। भोग के द्वारा ही रोग का क्षय होता है। यदि इसी से इस देह का नाश होना है तो मुझे कोई दु:ख नहीं है।
शिष्यों के रुदन से आचार्य द्रवित हो गये उन्होंने वैद्य चिकित्सा की स्वीकृति दे दी... किन्तु चिकित्सा से रोग घटने की अपेक्षा बढ़ने लगा...
यतिवर! आपका रोग असाध्य है.. औषधियां कार्य नहीं कर रही
मेरी प्राणघातक अभिचार क्रिया व्यर्थ नहीं हो सकती...
राजवैद्य! आप दुखी न हों। अब आप लौट जाइये अनेक रोगी आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं..
रोग बढ़ता गया... देह त्याग निश्चित लगने लगा था .. तब ही शिष्य पद्मपाद को पता चला कि किसी ने प्राण घातक अभिचार क्रिया की है...
गुरुदेव! किसी दुष्ट ने गुप्त रूप से आप पर प्राण घातक अभिचार मंत्र क्रिया की है... मैं प्रत्यभिचार क्रिया कर आपको रोग मुक्त कर दूँगा.. आज्ञा दीजिए।
पद्मपाद! शांत हो जाओ। कभी प्रत्याभिचार न करो, तुम्हें नर हत्या का पाप लगेगा। मेरे नश्वर शरीर से किसी का अभीष्ट सिद्ध होता है तो होने दो।
आप स्वयं समाधि से शरीर छोड़ दें तो हमें दुख न होगा, किंतु कोई दुष्ट आपके प्राण हर ले यह हम कैसे सहन करें ?
आपकी जीवन रक्षा के लिए मुझे नरक भी भोगना पड़े तो वो भी मुझे स्वीकार है।
अब क्या होगा...
पद्मपाद की दृढ़ता देखकर... आचार्य ने मौन स्वीकृति दे दी...
पद्मपाद द्वारा ओंकार मंत्र से प्रत्याभिचार... आचार्य रोग मुक्त हुए.. और अभिनव गुप्त स्वयं भगन्दर रोगी हो गया। वह चुपचाप भाग गया, बाद में उसकी मृत्यु हो गई
संसार में जो दूसरे को हानि पहुंचाते हैं, उनका दण्ड विधान ईश्वर ही करता है.. पद्मपाद तुम निर्दोष हो
ईर्ष्या व द्वेष मानव के परम शत्रु हैं।... धर्म के नाम पर पाखण्ड व यश की आकांक्षा मनुष्य को निर्दयी व पापी बना देती है अभिनव गुप्त इसका प्रमाण है
क्रमशः
इस घटना के बाद इस प्रदेश में आचार्य मत की स्वतः स्वीकार्यता हो गई

पाक्षिक
पाथेय कण
1 अक्तूबर, 2020

आर.एन.आई.पंजीयन क्र. ४८७६०/८७ अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY /२०२/२०१८-२० JAIPUR CITY/ WPP - ०१/२०१८-२०

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सेवा विभाग द्वारा
आयोजित रक्तदान शिविर

सीकर में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर बोलते हुए
विद्या भारती राजस्थान क्षेत्र के संगठन मंत्री शिव प्रसाद जी

बीटीपी की जनजातीय समाज विरोधी गतिविधियों के विरोध में
संत समाज ने उदयपुर जिलाधीश को ज्ञापन

सेवा भारती चित्तौड़गढ़ के कार्यकर्ताओं द्वारा
मोगर मगरी गांधी नगर बस्ती में पौधारोपण किया गया

महंत चांदनाथ औषधालय, अलवर के लोकार्पण कार्यक्रम में दीप
प्रज्ज्वलित करते हुए संघ के उ.प. क्षेत्र प्रचारक श्री निंबाराम

हिन्दू जागरण मंच के आर्थिक स्वावलम्बन योजना के तहत
'आपणी दुकान' का निरीक्षण करते हुए संघ के पदाधिकारी

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक माणक चन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी,ए-10,22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालय: पाथेय भवन, 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-302017
सम्पादक: मेघराज खत्री
प्रेषण दिनांक 1,2,3,4 व 5 अक्तूबर 2020 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में,